thearyasamaj.org

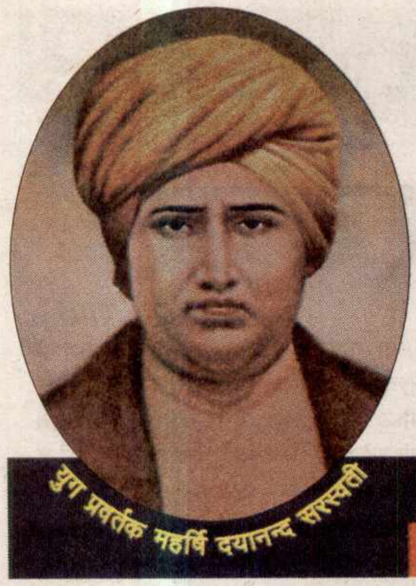

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 20 29 मई से 4 जून, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 ज्ये. शु. 01

भारत के सुनहरे भविष्य के लिए मोदी जी ने बढ़ाया पहला कदम

45 मंत्रियों के साथ 15वें प्रधानमंत्री के रूप में ली शपथ

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात में श्री नरेन्द्र मोदी ने

मेहमान नवाजी में गर्मजोशी के साथ हिंसा व आतंकवाद पर लगाम लगाने पर दिया जोर

भारत के नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने अपने उन तमाम चिर आलोचकों को अपने खास अंदाज से जवाब देते हुए सिद्ध कर दिया कि न मुस्लिम-पाकिस्तान विरोध और न ही साम्प्रदायिक तुष्टीकरण अपितु भारत के 125 करोड़ लोगों को दक्षिण एशियाई देशों के बाकी 50 करोड़ लोगों को साथ लेकर सर्वांगीण-समुचित विकास की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने शपथ ग्रहण पर दक्षेस के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित करने की मोदी पहल का भरपूर स्वागत करते हुए बयान दिया था कि-

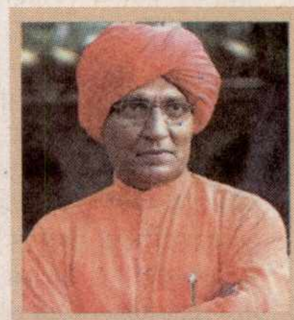

भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा चुनावों में अभूतपूर्व सफलता ने एक नये युग का सूत्रपात कर दिया है। प्रधान मंत्री प्रत्याशी के रूप में श्री नरेन्द्र भाई मोदी ने आशा जगाई "अच्छे दिन आने वाले हैं"। अब एकछत्र बहुमत हासिल कर तथा अपने राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन के साथ मिलकर 336 सांसदों के साथ श्री नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधान मंत्री के नाते "अब अच्छे दिन लाकर दिखायें" ऐसी जिम्मेदारी उनके कन्धों पर आ गई है। सबसे अच्छी बात यह है कि संकीर्ण साम्प्रदायिक एजेण्डे को पूरी तरह दरकिनार कर श्री नरेन्द्र मोदी ने एक नई छवि के साथ, सबका विकास, सबके साथ का जो भरोसा दिलाया है, अपने शपथग्रहण समारोह में दक्षिण एशियाई देशों के राष्ट्राध्यक्षों को विशेष रूप से आमंत्रित कर "भारत का विकास-दक्षिण एशिया के साथ" बहुत गहन दूरदर्शिता का परिचय दिया है। युद्ध के धमाकों के बदले परस्पर संवाद से समस्याओं को सुलझाने तथा मैत्री संबंधो के बल पर 65 वर्षो से अवरूद्ध विकास का मार्ग प्रशस्त करने का संकल्प जगाया है। यही सोच शीघ्र ही माओवादी समस्या के समाधान को भी साकार करेगी, आतंकवाद को समाप्त कर शांति समृद्धि का वातावरण बनाने तथा भारत के दलित शोषित आदिवासियों को उनके संविधान प्रदत्त अधिकारों से लैसकर आगे बढ़ायेगी।

अपने वादों के अनुसार भारत भूमि से शराब और मांसाहार को मिटाने की दिशा में नई सरकार पहल करेगी तो सारा राष्ट्र धन्य-धन्य हो उठेगा। किसानों को उनकी उपज का पूरा लागत जोड़कर 50 प्रतिशत मुनाफे की व्यवस्था करना, असंगठित क्षेत्र के 45 करोड़ गरीब मज़दूरों को राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन दिलाने की दिशा में तथा महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार सब बच्चों को समान शिक्षा के अवसर दिलाने में सरकार को अपनी क्रान्तिकारिता का परिचय देना होगा। इन सब दिशाओं में बढ़ते कदमों से भारत समूचे विश्व पटल पर अपनी ओजस्वी प्रतिभा के साथ सुशोभित हो-ऐसी शुभकामना के साथ,

-स्वामी अग्निवेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तानी समकक्ष नवाज शरीफ की मेहमान नवाजी काफी गर्मजोशी और भावुक अंदाज में की। इसके बाद वार्ता की औपचारिक मेज पर आतंकवाद के मसले पर दोनों के बीच कई खरी-खरी बातें भी हुईं। मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि दोस्ती के इरादों पर अमल से पहले हिंसा व आतंकवाद पर लगाम लगाना जरूरी है। उन्होंने मुंबई आतंकी हमले की अदालती सुनवाई की धीमी रफ्तार से लेकर भारत के खिलाफ आतंकी साजिश रचने वालों को मिल रही पनाह जैसे मुद्दे भी शरीफ को गिनाए। दोनों पक्ष संबंध सुधार की गाड़ी आगे बढ़ाने के लिए विदेश सचिवों के आपसी संपर्क से रास्ता निकालने पर रजामंद हो गए हैं। मोदी ने पाकिस्तान जाने का न्यौता भी कबूल लिया है। सत्ता परिवर्तन के बाद भारत-पाक प्रधानमंत्रियों की पहली भेंट में दोनों ओर से रिश्ते सुधारने के संकल्प के साथ ही अपनी चिंताओं की लकीरें साफ करने पर भी जोर था। दिल्ली के हैदराबाद भवन में मंगलवार दोपहर मोदी व शरीफ के बीच करीब 45 मिनट की भेंट में यूं तो व्यापार, वाणिज्य, आवाजाही, पानी से लेकर कश्मीर तक लगभग हर मुद्दे पर बात हुई, लेकिन मोदी-शरीफ की पहली औपचारिक शिखर वार्ता में भारत की ओर से आतंकवाद को सबसे ज्यादा तवज्जो दी गई। भारत के लिए आतंकवाद अहम मुद्दा है, तो पाकिस्तान संबंध सुधार के बड़े मुकाम तय करने को उत्सुक है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने भारत के नए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ मंगलवार को पहली भेंट में मिलकर काम करने की वकालत की। उन्होंने कहा कि दोनों देशों को टकराव को सहयोग में बदलने के लिए मेहनत करनी होगी।

उन्होंने मोदी से मंगलवार की मुलाकात को अच्छी और सकारात्मक बताया। नवाज ने कहा कि दोनों इस बात पर सहमत हो गए हैं कि इस बैठक के परिप्रेक्ष्य में दोनों देशों के विदेश सचिव दोतरफा एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए और उसकी समीक्षा के लिए जल्द ही मुलाकात कर सकते हैं।

पाकिस्तान रवानगी से पहले शरीफ ने मीडिया से मुलाकात की और एक बयान पढ़ा जिसमें उन्होंने कहा कि उनकी सरकार सहयोग और गंभीरता की भावना के साथ दोनों देशों के बीच सभी मुद्दों पर चर्चा के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि हम इस बात के लिये तैयार हो गये हैं कि नई दिल्ली में हमारी मुलाकात दोनों देशों के लिए ऐतिहासिक अवसर होना चाहिए। दोनों देशों की डेढ़ अरब जनता चाहती है कि हम उनके कल्याण और उनके कुशलक्षेम पर ध्यान दें। मैंने अनुरोध किया कि हमें मिलकर क्षेत्र को अस्थिरता और असुरक्षा से छुटकारा दिलाना चाहिए जो दशकों से हमें घेरे हुए है। उन्होंने कहा कि शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए हमारा मिलकर काम करना अहम है।

thearyasamaj.org

किसानों की सुध ले सरकार

– देवेन्द्र शर्मा

नरेंद्र मोदी को मिले प्रचंड बहुमत और पूंजी बाजार के हर्षोल्लास के बीच आत्महत्या करने वाले किसानों की विधवाओं का दर्दनाक विलाप कहीं दब सा गया है और यह अब बेसुरी–सी आवाज बन गया है। मेरे विचार से यह सबसे बड़ी नीतिगत पंगुता है, जो देश को विपदा में डालने वाली है। इसलिए जब मैंने संसद के सेंट्रल हॉल में दूसरे दिन नरेंद्र मोदी को यह कहते हुए सुना कि हमारी सरकार गरीबों के लिए सोचेगी, उनके लिए कार्य करेगी और उनके लिए जिएगी तो मुझे अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी सरकार होगी जो भारत के गांवों में रहने वाले लोगों, देश के युवाओं और महिलाओं के लिए समर्पित होगी। इस भाषण से मेरी उम्मीदें फिर से जग गईं। एक ऐसे देश में जहां कृषि वर्षों से उजाड़ है, जहां प्रति वर्ष करीब 50 लाख लोग खेती छोड़ कर शहरों में छोटी–मोटी नौकरी की तलाश में पलायन कर रहे हों, वहां कृषि को फिर से खड़ा करना नई सरकार के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। देश में आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या दिनोंदिन तेजी से बढ़ रही है। हैदराबाद स्थित सेंटर फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर में डॉ. जीवी रमनजानेयुलु बताते हैं कि पिछले कुछ सप्ताह से विदर्भ क्षेत्र में प्रतिदिन पांच किसान आत्महत्या कर रहे हैं जबकि तेलंगाना क्षेत्र में भी किसानों की खुदकुशी की खबरें मिल रही हैं। उन्होंने यह आकलन क्षेत्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्ट के आधार पर निकाला है। बुंदेलखंड में एक सिविल सोसायटी कार्यकर्ता संजय सिंह बताते हैं कि पिछले 15 दिनों में प्रतिदिन 2–3 किसान आत्महत्या करने को विवश हुए। खाद्यान्न का कटोरा कहे जाने वाले पंजाब में भी पिछले 40 दिनों में 10 किसानों ने आत्महत्या की है।

बुंदेलखंड क्षेत्र में इस वर्ष के प्रथम तीन माह में ही 105 किसानों द्वारा आत्महत्या करने की खबरें सामने आईं। सिविल सोसायटी कार्यकर्ता संजय सिंह के मुताबिक 31 मार्च 2014 तक 105 किसान खुदकुशी कर चुके हैं। मध्य भारत के तमाम हिस्सों में खराब मौसम के कारण जब खड़ी फसलें बर्बाद हो जाती हैं तो कर्ज में डूबे इन किसानों को कोई सहारा नहीं दिया जाता। पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र में फरवरी–मार्च में ओलावृष्टि के कारण खड़ी फसल बर्बाद होने से 101 किसानों ने अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। इनमें से 30 आत्महत्याएं तो अप्रैल में की गईं। कुछ दिनों पूर्व कर्ज में डूबे दो किसान भाइयों 33 वर्षीय जुगराज सिंह और 30 वर्षीय जगतार सिंह के बारे में एक खबर पढ़ी कि दोनों ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। वे पंजाब के मंसा जिले के हसनपुर गांव के रहने वाले थे। उन्होंने पंजाब कोआपरेटिव एग्रीकल्चर डेवलपमेंट बैंक, बुडलाडा से तीन लाख रुपये का लोन ले रखा था। बकाया राशि जमा नहीं किए जाने पर संबंधित बैंक ने उन्हें नोटिस भेजा था। पैसा नहीं लौटा पाने के कारण उन्होंने अपनी जान ले ली। दुर्भाग्य से 13 वर्ष पहले उनके पिता ने भी आत्महत्या कर ली थी। हर कहीं कहानी एक सी है। बढ़ता कर्ज और घटती आय। पिछले 17 वर्षों में तीन लाख किसानों ने आत्महत्या की है। भारत में हर एक घंटे में दो किसान आत्महत्या कर रहे हैं। इस तरह की हत्याओं का सिलसिला अनवरत जारी है। पिछले कुछ सप्ताहों में किसानों की बढ़ती आत्महत्याएं कृषि के साथ नीति निर्माताओं की उदासीनता और उनकी उपेक्षा को दर्शाती हैं। किसानों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है मानो वे समाज पर बोझ हैं, इसलिए सारी कोशिश इस बात पर है कि वह किसी तरह कृषि कार्य छोड़ें और शहरों में पलायन करें। बहुत शीघ्र देश को इससे छुटकारा पाना होगा और यह देश की आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए भी बेहतर होगा। हालांकि मुझे देश के किसानों की हालत को लेकर कोई बहुत अधिक उम्मीद नहीं है। 2011 की जनगणना के मुताबिक प्रतिदिन करीब 2400 किसान कृषि कार्य को छोड़ रहे हैं और छोटी नौकरी के लिए शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। इस वजह से गांवों से शहरों की ओर पलायन तेजी से बढ़ रहा है। ये किसान शहरों में आकर या तो गार्ड बन जाते हैं अथवा रिक्शा चलाने का काम करते हैं। मैं इस आर्थिक तर्क को कभी नहीं समझ पाया कि पहले कृषि क्षेत्र में मौजूद रोजगार को खत्म किया जाए और फिर शहरों में दिहाड़ी मजदूरी वाले रोजगार पैदा किए जाएं। यह एक कटु तथ्य है कि करीब 60 फीसद किसान भूखे पेट सोने को विवश हैं। इस संदर्भ में अर्थशास्त्री नरेंद्र मोदी से मांग कर रहे हैं कि वह चुनावों में किए गए वादे को पूरा करें कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पाने वाले किसानों को लाभ का 50 फीसद हिस्सा दिया जाए। सवाल है कि जब कृषि वस्तुओं की कीमतें बढ़ेंगी तो किस तरह महंगाई कम होगी। मनमोहन सिंह ने कई बार कहा है कि भारत को 70 फीसद किसानों की जरूरत नहीं है, इसलिए जनसांख्यिकीय बदलाव की त्वरित आवश्यकता है। इसी कारण कृषि क्षेत्र के लिए सरकार ने पर्याप्त धन नहीं दिया। यह जानकर हैरत होती है कि 12वीं योजना के दौरान देश को 60 फीसद रोजगार देने वाले क्षेत्र कृषि के लिए महज 1.50 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए। कृषि क्षेत्र में आज अधिक निवेश की आवश्यकता है। 2014–15 में कॉरपोरेट जगत को बतौर टैक्स छूट 5.73 लाख करोड़ रुपये दिए गए।

इस वर्ष मौसम विभाग ने सामान्य से कम बारिश की भविष्यवाणी की है। इसलिए नई सरकार को तत्काल ध्यान देना होगा ताकि संभावित सूखे के प्रभाव को कम किया जा सके। कृषि को आर्थिक रूप से उपयोगी और पर्यावरण के अनुकूल बनाने पर भी विचार करना होगा। आखिर भारत कृषि को समृद्ध क्यों नहीं बना सकता ताकि किसान आत्महत्याएं न करें। नरेंद्र मोदी के पास गरीबों के लिए सोचने और इस दिशा में कार्य के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। निश्चित ही कृषि के गौरव को बहाल करके युवाओं, महिलाओं और किसानों की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है।

(लेखक कृषि और आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ हैं)

जागरण से साभार

संस्कृत स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून, शुक्रवार से 12 जून (वीरवार) 2014 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएं एवं युवतियां भाग लेंगी।

शिविर के मुख्य आकर्षण :

1. राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी। 2. योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा। 3. वैदिक विद्वानों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा। 4. चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे। 5. व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा। 6. भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।

कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लेकर आयें।

ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएं।

इच्छुक छात्राएं 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातःराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास बैंक/ड्राफ्ट युवा निर्माण अभियान अथवा महिला समता मंच के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन

कार्यालय :– स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

मो.:– 0-9416630916, 9354840454, 9466430772

thearyasamaj.org

कालेधन की जांच के लिए एसआइटी को मंजूरी

सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार ने पहला काम काला धन रखने वालों पर नकेल कसने से शुरू किया है। सरकार ने काला धन बाहर निकालने के पुख्ता इंतजाम करते हुए एसआईटी गठित कर दी है। काले धन की जांच व निगरानी करने वाली इस एसआइटी में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं जबकि अन्य 11 सदस्य विभिन्न महकमों के आला अधिकारी हैं।

संप्रग सरकार की हीला-हवाली के बाद गत एक मई को ही सुप्रीम कोर्ट ने एसआइटी (विशेष जांच दल) का गठन कर दिया था और अध्यक्ष व उपाध्यक्ष समेत सदस्यों के नाम भी तय कर दिए थे। शीर्ष अदालत ने सरकार को इस बाबत अधिसूचना जारी करने का निर्देश दिया था जिसकी समय सीमा बुधवार को समाप्त हो रही थी। मोदी कैबिनेट ने मंगलवार को कामकाज संभालते ही पहला काम एसआइटी गठन की मंजूरी देने का किया।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल की पहली बैठक में तय किया गया कि सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज एमबी शाह की अध्यक्षता में एसआइटी काम करेगी। एसआईटी के उपाध्यक्ष भी सुप्रीम कोर्ट के एक अन्य रिटायर जज अरिजीत पसायत होंगे। उन्होंने बताया कि एसआईटी में सदस्य के रूप में राजस्व सचिव, भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर, खुफिया ब्यूरो के निदेशक, निदेशक (प्रवर्तन), सीबीआइ निदेशक, अध्यक्ष केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी), महानिदेशक (राजस्व खुफिया), निदेशक (वित्तीय खुफिया) और निदेशक (रॉ) शामिल होंगे।

एसआइटी को हसन अली के मामलों में और काले धन के अन्य मसलों में जांच, कार्रवाई करने और मुकदमा चलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। एसआईटी के अधिकार क्षेत्र में वे सभी मामले आयेंगे, जिनमें या तो जांच शुरू हो चुकी है या लंबित है या जांच शुरू की जानी है या फिर जांच पूरी हो गई है। एसआइटी एक व्यापक कार्य योजना तैयार करेगी, जिसमें आवश्यक संस्थागत ढांचा तैयार करना शामिल है, जो देश को काले धन के खिलाफ लड़ाई में मदद करेगा। विदेश से काले धन को वापस लाने के लिए हमारा जो संकल्प और प्राथमिकता रही है, उसी के तहत एसआईटी का गठन किया गया है।

- जागरण से साभार

Unlike Modi, Oram wants soft steps to curb Naxalism

- Subodh Ghildiyal

Tribal affairs minister Jual Oram believes Naxalism can be resolved only by winning the hearts and minds of tribals who form the leadership and the infantry of the outlawed groups, rubbishing the belief that the Narendra Modi-led BJP views it as a security issue that requires strong-arm measures.

"BJP sees Naxalism as a social problem and will try to solve it accordingly," Oram told TOI. "You cannot solve Naxalism merely through development. Constructing roads or rail tracks is good but that is not enough. Naxalites can blow them up. We have to go to the Naxalites, to the tribals, and talk to them, win them over," he added.

While advocating a soft approach in dealing with the outlaws, Oram said tribals had drifted to the Naxal fold having lost trust in the system. "The tribals have been cheated, oppressed by police, forest department, excise department, by the administra tion. They have lost faith. That is helping the Naxalites. We have to woo them back."

Oram's strong advocacy for a soft approach is in stark contrast to the zero-tolerance espoused by PM Modi.

In an interview to TOI during the elections, Modi had said, "Maoism and terrorism are the biggest threats to our internal security. I have always advocated a zero-tolerance approach to these problems. Further, we need a clear-cut legal framework to address these challenges. Regardless of what are the reasons for the people to resort to violence, our ability to deal with it should not be compromised by the lack of preparedness."

While the difference of approach may appear yawning, Oram, in-charge of tribal welfare, is bound to advocate the "root-cause" approach, which may not be a true reflection of the thinking of the government's leadership.

Oram told TOI his top priority would be to win the hearts of tribals who populate the Naxal-infested zones, be it in Bastar or Odisha or Jharkhand. While agreeing that Naxalism had an internal security strand, he added, "It is a multi-dimensional problem and we have to deal with it likewise."

टाइम्स ऑफ इण्डिया से साभार

घाटे की खेती से मुक्त होंगे किसान

कृषि में नई पहल

नए कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने किया दावा

- लाभकारी खेती व किसानों की खोई प्रतिष्ठा दिलाएगी मोदी सरकार
- आगामी सीजन तक बदल जाएगी समर्थन मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया
- देसी नस्लों की गायों के संवर्धन की शुरू होगी नई परियोजना
- प्रधानमंत्री ग्रामीण सिंचाई व कृषि आय गारंटी बीमा योजना होगी शुरू

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

खेती को लाभकारी बनाने और किसानों को उनकी खोई प्रतिष्ठा दिलाने के लिए मोदी सरकार जल्दी ही कुछ बड़ी परियोजनाएं शुरू करेगी। हर खेत तक सिंचाई का पानी पहुंचाने और किसानों को लाभ की गारंटी दिलाने वाली योजनाओं का खाका पहले से ही तैयार है। कृषि मंत्रालय इस पर जल्दी ही काम चालू कर देगा। नए कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने पदभार ग्रहण करने के बाद 'जागरण' से बातचीत में खेती की विकास दर को नई ऊंचाई तक पहुंचाने का दावा किया।

कृषि मंत्रालय में कामकाज संभालने के साथ ही सिंह ने अधिकारियों को अपनी मंशा से अवगत कराते हुए काम शुरू करने संकेत दे दिया। कृषि मंत्री ने कहा कि उनकी सरकार अपने चुनावी वादे के तहत प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की तर्ज पर प्रधानमंत्री ग्रामीण सिंचाई योजना शुरू करेगी। इसकी रूपरेखा विभिन्न मंत्रालयों के सहयोग से तैयार की जाएगी। सिंचाई की सुविधा मिल जाने से कृषि उत्पादकता में वृद्धि होनी तय है। फिलहाल देश की दो तिहाई जमीन में असिंचित खेती होती है।

राधा मोहन ने कहा कि खेती में लाभ की गारंटी देने वाली बीमा योजना से किसानों की दशा तो सुधरेगी ही उनकी खोई प्रतिष्ठा भी लौटेगी। अन्नदाताओं की दरिद्रता से ही देश का बुरा हाल है। ऐसी ही प्रायोगिक परियोजना वर्ष 2003 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में शुरू हुई थी, जिसे आगे बढ़ाना है। इस योजना से किसानों को दैवीय प्रकोप से होने वाले नुकसान की भरपाई की गारंटी होगी।

मानसून के कमजोर होने के पूर्वानुमान पर कृषि मंत्री ने कहा कि कृषि मंत्रालय की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। राज्य स्तर पर आला अफसर दौरा कर जायजा ले रहे हैं। खेती के साथ पशुधन विकास पर भी सरकार पूरा ध्यान देगी। देसी नस्ल की गायों के विकास की योजना शुरू की जाएगी। हमारी परंपरागत नस्लों पर दुनिया के विकसित देश अनुसंधान कर उन्हें उन्नत बनाकर लाभ उठा रहे हैं।

कृषि शिक्षा के स्तर पर असंतोष जताते हुए सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर सिर्फ एक केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय है, जबकि बुंदेलखंड में दूसरा विश्वविद्यालय शुरू होने वाला है। यह संख्या बहुत कम है। इसे बढ़ाने की जरूरत है। इसके अलावा फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी का भी सवाल है। खरीफ फसलों के लिए फिलहाल तो पुरानी प्रणाली पर ही समर्थन मूल्य घोषित किए जाएंगे, लेकिन अगले चरण में प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किया जाएगा।

thearyasamaj.org

ज्योतिषियों के चक्कर अथवा अन्धविश्वास की कड़ियाँ

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

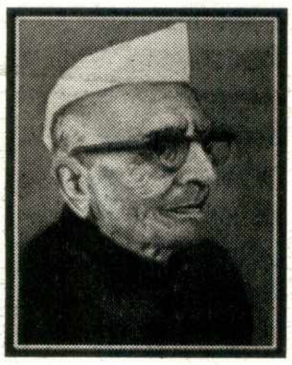

सेवक व स्वामी अन्तर?

एक बार मैंने एक लड़के से पूंछा, सेवक और स्वामी में क्या अन्तर है?उसकी समझ में न आया। मैंने कहा, देखो सेवक कुर्सी को सिर पर रखकर चलता है और स्वामी उस पर बैठता है। बुद्धिमान् लोग प्रकृति के दृश्यों का अवलोकन करते और उसका समुचित प्रयोग करके लाभान्वित होते हैं। मूर्ख अज्ञानी उन्हीं दृश्यों को देखकर चकित होते और उनके सामने हाथ जोड़ते हैं। वेद में अग्नि को देवता कहकर पुकारा गया है। अग्नि का जलना प्रकृति का एक विशेष दृश्य है, परन्तु जिन वैज्ञानिकों ने अग्नि के गुणों को समझा है उन्होंने आग से कितने काम लिये?आज मानव अग्नि से न केवल भोजन पकाता है प्रत्युत आग को घड़ा बनाकर उसकी पीठ पर सवार होता है परन्तु जब वेद के आशय को भूलकर भारतवर्ष अविद्या के खड्डे में गिर गया तो लोगों ने अग्नि के सामने हाथ जोड़े। उसमें बलियां (पशुओं की) दीं। उसकी स्तुति के गीत गाये। उससे मिन्नतें मांगी गईं। अग्नि अज्ञानी मनुष्य के लिये उपास्य है परन्तु बुद्धिमान् के लिए साधन। अन्धविश्वासी अग्नि की पूजा करता है। ज्ञानी उसका प्रयोग करता है। अविद्या मनुष्य को दास बनाकर रखती है।

विदेशी राज से स्वतन्त्र परन्तु सितारों के दास :- भारतवर्ष में जहाँ और दूसरी प्रकार की दासता प्रचलित हो गई वहाँ सितारों की भी भयानक दासता है जो आजकल भी दुःखी कर रही है। भारत आज स्वतन्त्र है। किससे?केवल अंग्रेजी राज से । परन्तु सितारों की दासता का जुआ आज भी उसकी गर्दन पर घाव कर रहा है। और विचित्र बात तो यह है कि भारत के लोग आज भी इस दासता के जुये को सम्मान का निशान समझ रहे हैं।

सितारों के चक्कर में :- एक बार मुझे एक मित्र ने एक विवाह संस्कार करवाने के लिए बुलाया। कन्या के पिता आर्य थे। आर्य सामाजिक रीति से विवाह होना था। मैं प्रायः संस्कार करवाने नहीं जाता परन्तु कलकत्ता के एक मित्र के विशेष आग्रह पर चला गया। विवाह वाराणसी में एक पंजाबी महाशय के यहां होने वाला था। जब में काशी पहुंचा तो विवाह के समय के बारे में पूछा कि संस्कार किस समय होगा?कन्या के पिता ने उत्तर दिया तीन बजे रात्रि का मुहूर्त निकला है। मैंने पूछा, ''आर्य समाज में मुहूर्त का क्या अर्थ?'' वे कहने लगे कि हम तो ज्योतिष के मानने वाले हैं तथा विवाह का यही समय होगा। मैं प्रयाग से गया था। असमंजस में पड़ गया। विवाह में विघ्न डालना नहीं चाहता था। न शोर मचाना मुझे प्रिय था। मैंने कहा, ''मैं तो अमुक मित्र के निमन्त्रण पर आया हूँ। आप किसी पण्डित को आर्यसमाज से बुला लें। संस्कार के समय मुझे जगा लें। मैं सम्मिलित हो जाऊँगा।'' वे समझ गये। और जब संस्कार आधा हो चुका तो एक व्यक्ति मुझे जगाने गया। उस समय लगभग चार बजे थे। उस दिन से मैंने कभी विवाह संस्कार कराने का साहस नहीं किया।

इस अन्धविश्वास ने राज्य तक डुबो डाले :- आर्य समाज में इस प्रकार के उदाहरण थोड़े हैं परन्तु आर्य समाज से बाहर तो ऐसा प्रतीत होता है कि संसार तारों के ही आधीन है। हिन्दुओं का तो कोई भी काम तारों व उनके उपासकों की सहायता के बिना नहीं चलता। जब बच्चा जन्म लेता है ज्योतिषी आता है। नाम रखा जाता है तो ज्योतिषी की सहायता लेनी पड़ती है। ज्योतिषी यदि चाहे तो अच्छे से अच्छे जोड़े को मिलने से रोक दे। ज्योतिषी के यह कारनामे साधारण मनुष्यों के जीवन के लिए ही निर्णायक नहीं है। इन्होंने बड़े-बड़े विशाल राज्यों को विनष्ट कर दिया है। इतिहास बताता है कि भारत को बाबर की दासता के पंजे में जकड़ने वाली यही तारों की दासता (ज्योतिष) ही थी। कहते हैं जब बाबर ने राणा संग्रामसिंह पर चढ़ाई करने का विचार बनाया तो बाबर का दिल कांपने लगा। राणा सांगा की शूरता की सारे भारत में धाक थी। बाबर ने सुन रखा था कि राणा संग्राम सिंह को हराना लोहे के चने चबाना है। बाबर को आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। वह घेरा डाले प्रतीक्षा करता रहा। उधर राणा सांगा की सेना आक्रमणकारियों को रोकने को तैयार थी। राणा सांगा चाहता था कि दुर्ग से बाहर निकल कर अरिदल पर टूट पड़े। राणा के लिए ऐसा करना कठिन नहीं था। बाबर अपरिचित था। जब कई दिन हो गये और राणा सांगा ने कुछ न किया तो बाबर को आश्चर्य हुआ और उसने अपने गुप्तचर बात का पता लगाने को भेजे। उन्होंने बाबर को सूचना दी कि राणा सांगा शुभ मुहूर्त की बाट जोह रहा है। उसके पण्डितों ने उसे सूचित किया था कि ग्रह प्रतिकूल हैं। जब तक ग्रह अनुकूल न हों, शत्रु से टक्कर लेने में विजय न होगी। बाबर ईशोपासक था। उसने सोचा के ग्रहों के दास वीर भी हों तो क्या। वह समझ गया कि यह ज्योतिषियों की शिक्षा का प्रभाव है कि प्रत्येक सैनिक के हृदय पर भय बैठा है। जिस मनुष्य को यह निश्चय हो जाये कि प्रकृति (Nature) उसके विरुद्ध है उसका हृदय आधा रह जाता है। बाबर ने ज्योतिषियों की इस भविष्यवाणी का लाभ उठाया। उसने अपने सैनिकों से कहा कि राणा सांगा के ग्रह अनुकूल नहीं हैं। अतः इसी घड़ी धावा बोल दिया जाये। इसका तो सीधा अर्थ है कि ग्रह मेरे अनुकूल है। बाबर ने शीघ्र धावा बोल दिया। राणा संग्राम के वीरों को ज्योतिषियों ने हतोत्साहित कर रखा था। राणा जी जान से लड़ा परन्तु पराजित हुआ। सूर्यवंश का सूर्य सदा-सदा के लिए अस्त हो गया। मुगल राज की स्थापना हो गई। महाराणा प्रताप आदि को जो कष्ट उठाने पड़े वे इसी ज्योतिष का परिणाम थे। जो वीर तोप तलवार से नहीं डरता वह ग्रहों तारों से डर जाता है। क्योंकि तलवार को तो देख सकते हैं सितारों के प्रभाव लुकछुप कर घात लगाते हैं।

कैसी-कैसी युक्तियां घड़ी जाती हैं :- स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि बच्चों को ज्योतिषियों से बचाना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार बच्चें के मन पर ग्रहों का प्रभाव बैठ गया तो वह जवान होने पर और अधिक बल पकड़ेगा। बच्चे ग्रहों से इतना नहीं डरते जितना कि नवयुवक डरते हैं। उनको यही बताया गया है कि जो कुछ भी होता है ग्रहों के प्रभाव से ही होता है। ग्रहों की चाल का सारे संसार पर आधिपत्य है। ग्रहों की दासता की बन्धन कड़ियों को सुदृढ़ करने के लिए कई प्रकार के तर्क सोचे गये हैं। एक बार एक आर्य समाजी मित्र ने मुझे कहा कि ज्योतिष का फल अवश्य होता है। उसके लिये वैज्ञानिक युक्ति है। मैंने कहा, कैसी?उसने कहा ग्रहों की गति में व मनुष्य के भाग्य में कुछ समानान्तरता (Parallelism) है। जैसे-जैसे मनुष्य के भाग्य में होता है उसकी भविष्यवाणी के रूप में कुछ न कुछ संकेत ग्रहों की गति में दिखाई देते हैं। जैसे दो घड़ियों की सुइयाँ पृथक-पृथक चलती हुई भी समानान्तर दूरी पर रहती हैं, और आप एक घड़ी में देखकर समय बता सकते हैं कि दूसरी में भी यही समय होगा। इसी प्रकार चांद, सूर्य, शनिश्चर आदि की चाल से यह जान सकते हैं कि अमुक व्यक्ति का भाग्य किस ओर जा रहा है। यह तर्क इस ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि सामान्य मनुष्य इस पर विश्वास कर लेता है तथा ज्योतिष वालों की बातों पर विश्वास हो जाता है। वास्तव में यह युक्ति भ्रामक है। ग्रह प्रकृति का एक भाग है। इसी प्रकार प्रकृति में बहुत सी ऐसी वस्तुएं हैं यथा नदी, पर्वत, वृक्ष आदि। ये विभिन्न पदार्थ अपने क्षेत्र में घटते बढ़ते रहते हैं। हमारे पास कोई प्रमाण नहीं कि इनकी गति को दो घड़ियों की गति से उपमा दी जाये। इतनी दूर आकाश में जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि प्रकृति में इतनी समानान्तरता होती जितनी दो घड़ियों में है तो हम पर्वतों व नदियों की चाल देखकर अपने जीवन की दुर्घटनाओं का पता लगा सकते। यदि हिमालय पर्वत व गंगा नदी हमारे जीवन के समानान्तर नहीं चलते तो शनिश्चर या बृहस्पति तारा कैसे चल सकता है?एक वृक्ष दूसरे वृक्ष के समानान्तर नहीं है। एक नदी दूसरी नदी के समानान्तर नहीं। एक पर्वत दूसरे पर्वत के समानान्तर नहीं और एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के समानान्तर नहीं। ग्रहों की गति का सम्बन्ध सब मनुष्यों के जीवन से एक सा है। जो ग्रह जिस प्रकार से गति कर रहे थे उसका प्रभाव बाबर पर उसी प्रकार था जितना व जैसा राणा सांगा पर। ग्रह न हिन्दू थे न मुसलमान। वे किसी का पक्षपात नहीं कर सकते थे फिर क्या कारण है कि बाबर के जीवन के समानान्तर हो गये और राणा सांगा का उन्होंने साथ न दिया?

गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष :- ऋषि दयानन्द ने गणित ज्योतिष व फलित ज्योतिष की तुलना करके भली प्रकार से समझा दिया है कि गणित ज्योतिष तो विज्ञान के अनुकूल है और फलित

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि बच्चों को ज्योतिषियों से बचाना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार बच्चें के मन पर ग्रहों का प्रभाव बैठ गया तो वह जवान होने पर और अधिक बल पकड़ेगा। बच्चे ग्रहों से इतना नहीं डरते जितना कि नवयुवक डरते हैं। उनको यही बताया गया है कि जो कुछ भी होता है ग्रहों के प्रभाव से ही होता है। ग्रहों की चाल का सारे संसार पर आधिपत्य है। ग्रहों की दासता की बन्धन कड़ियों को सुदृढ़ करने के लिए कई प्रकार के तर्क सोचे गये हैं।

अगले पृष्ठ पर जारी है

thearyasamaj.org

गाय एक अद्भुत रसायनशाला

– श्री रोशनलाल जी पाल

जननी *जनकर दूध पिलाती, केवल साल छमाही भर।*
गोमाता पय सुधा पिलाती, रक्षा करती जीवन भर।।

अभी कुछ समय पहले एक पुस्तक अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित हुई थी, The Cow is a wonderful laboratary (गाय एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है)। इस पुस्तक में भी सिद्ध किया गया है कि प्रकृति ने समस्त जीव-जन्तुओं और सभी दुग्धारी पशुओं में से केवल गाय ही एक ऐसी पैदा की है, जिसे लगभग 180 फुट (2160 इंच) लम्बी आंत दी है। अन्य पशुओं या जीवधारियों में यह विशेषता नहीं है। यही कारण है कि गाय जो कुछ भी खाती या पीती है, वह इस लम्बी आंत से होकर अंतिम छोर तक जाता है।

जैसे दूध से मक्खन निकालने वाली मशीन में जितनी अधिक गरारियां लगाई जाती हैं, उससे उतना ही अधिक एवं शुद्ध फैट का मक्खन निकलता है, वैसे ही प्रकृति ने भी गाय की शारीरिक संरचना में सबसे लम्बी आंत दी है, जिससे उसका दूध अन्य दूध देने वाले पशुओं से अधिक श्रेष्ठ होता है। संक्षेप में गोवंश की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

गोवत्स – गाय प्रजनन (बच्चा जनने) के बाद 18 घण्टे तक उसके साथ रहे और उसे चाटती रहे तो वह उस बच्चे (बछड़ा-बछड़ी) को जिन्दगीभर भूलती नहीं है। इसी प्रकार गोवत्स भी सैकड़ों गायों के बीच में से अपनी माता को ढूंढकर दुग्धपान करता है, जब कि भैंस का बच्चा अपनी माँ को ढूँढ नहीं पाता।

खीस – प्रजनन के तुरंत बाद गाय के स्तनों से जो दूध निकलता है, उसे खीस, चीका, कीला या पेवस कहते हैं। देखने में यह दूध के समान ही होता है, परन्तु संरचना तथा गुणों में बिलकुल भिन्न होता है। सामान्य रूप से गरम करने पर तुरंत फट जाता है। इसीलिए इसे मिल्क केक बनाने की प्रक्रिया द्वारा पकाकर उपयोग में लेते हैं। प्रजनन के बाद 15 दिनों तक इसमे दूध की अपेक्षा प्रोटीन तथा खनिज तत्वों की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा लेक्टोज, वसा एवं पानी की मात्रा कम होती है। खीस में दूध की अपेक्षा केसीन और एलब्यूमिन की मात्रा दोगुनी, ग्लोब्यूलिन की मात्रा 12 से 15 गुनी तथा एल्यूमिनियम की मात्रा 6 गुनी अधिक होती है। सामान्य दूध की अपेक्षा खीस में खनिजतत्व भी अधिक होते हैं।

सींग – गाय की सींगों का आकार सामान्यत: पिरामिड जैसा होता है। वह एक शक्तिशाली एन्टीना के रूप में है। सींगों की मदद से गाय आकाशीय सभी ऊर्जाओं को शरीर में संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गोमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा मिलती है। आकाशीय ऊर्जा (कोस्मिक एनर्जी) को संग्रह करने का कार्य गाय के सींग करते हैं। इसके अलावा गाय की पीठ पर ककुद (ढिल्ला) होता है जो कि सूर्य की ऊर्जा और कई आकाशीय तत्त्वों को शरीर में ग्रहण कर गोमूत्र, दूध तथा गोबर द्वारा हमें मिलता है।

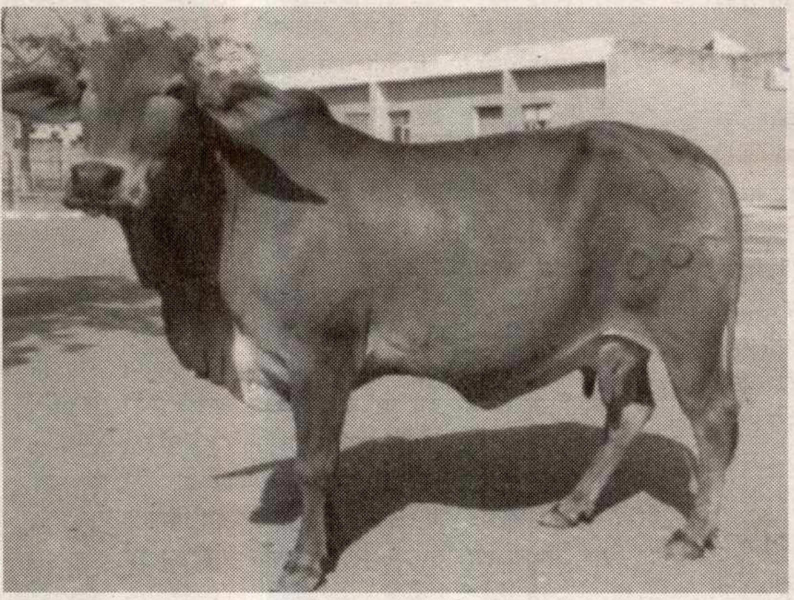

गाय का दूध – यह पौष्टिक तत्त्वों का भण्डार है। इसमें जल 87, वसा 4, प्रोटीन 4, शर्करा 5 तथा अन्य तत्त्व 1 से 2 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। गाय के दूध में 8 प्रकार के प्रोटीन्स, 11 प्रकार के विटामिन्स, 12 प्रकार के पिगमेंट्स तथा तीन प्रकार की दुग्ध गैसें पायी जाती हैं।

गाय के दूध में केरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। भैंस का दूध गरम करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं, जबकि गाय के दूध को गरम करने पर भी पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं।

गाय का मूत्र – गोमूत्र को आयुर्वेद में बड़ा ही उपयोगी बताया गया है। कुशल वैद्य अपनी आयुर्वेदिक दवाएं (गोलियां) बनाने में जल के स्थान पर गोमूत्र का ही प्रयोग करते हैं। गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड होता है, जो कीटाणुनाशक है और शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है, इसी कारण प्राचीन ग्रन्थों में इसे सबसे अधिक पवित्र कहा गया है। गंगाजल के समान इसे अधिक समय तक रखे जाने पर भी खराब नहीं होता। इसके अलावा गोमूत्र एवं गोदुग्ध में भी स्वर्णक्षार मौजूद रहता है, जो अति उपयोगी रसायन है। अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों तथा आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम, सोडियम और लेक्टोज होता है। इसके अलावा इसमें सल्फर, अमोनिया, लवणसहित विटामिन एबीसीडीई, एन्जाइम आदि तत्त्व भी हैं। ये तत्त्व ही विभिन्न रोगों में अनुपान भेद एवं मात्रा भेद के साथ प्रयुक्त होकर व्यक्तियों को बचाते हैं।

देशी गाय के गोबर-मूत्र-मिश्रण से प्रोपीलीन आक्साईड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है। गोमूत्र में कुल 16 प्रकार के मुख्य खनिज तत्व होते हैं, जो शरीर के रक्षण, पोषण और विकास में सहायक हैं। इसके समुचित सेवन से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और शरीर शक्तिशाली एवं चेतनायुक्त होता है। अनेक शोधों एवं परीक्षणों में इसमें सूक्ष्म रूप से चांदी तत्त्व भी पाया गया है, जो स्वास्थ्य रक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

गाय का शरीर – गाय के शरीर के रोम-रोम से गुग्गुल जैसी पवित्र सुगन्ध आती है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की वायु निकलती है, जो वातावरण को जन्तुरहित करके पवित्र बनाती है। गाय को रीठे के जल से नहलाने से उसको और अधिक आनन्द का अनुभव होता है। गाय के इन्हीं गुणों को देखकर कहा जाता है –

जा घर होय तुलसी अरु गाय।
ता घर वैद्य कबहुँ ना जाय।।

– गोग्रास से साभार

पिछले पृष्ठ का शेष

ज्योतिषियों के चक्कर अथवा अन्धविश्वास की कड़ियाँ

ज्योतिष विज्ञान के विरुद्ध है। फलित ज्योतिष कल्पित है। गणित ज्योतिष ग्रहों की गति पर निर्भर है। आप ग्रहों की गति को सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देख सकते हैं और यह पता कर सकते हैं कि कल सूर्य किस समय अस्त होगा तथा किस समय उदय। गणित के कुछ नियम हैं जिनसे स्पष्ट रूप से हम ग्रहों की गति के बारे में भविष्यवाणी कर सकते हैं। यह बात ग्रहों तक ही सीमित नहीं है। जब हम मित्र को तार देते हैं कि कल अमुक गाड़ी से अमुक नगर पहुंचेंगे, आप स्टेशन पर आकर मिलिये तो प्राय: भविष्यवाणी ठीक होती है। हम सूर्य व भूमि की गति जानते हैं। इससे समय का अनुमान हो जाता है। रेल की गति का भी ज्ञान होता है। रेल विभाग के प्रबन्धकों पर भी हम को भरोसा है कि वे जहां तक हो सकेगा समय का पालन करेंगे। इस प्रकार हम गिनती मिनती करके स्टेशन पर आते हैं और अपने मित्र को मिल जाते हैं।

यात्री के विचार व रेल की गति :- इस साधारण सी घटना से कई नियमों का सम्बन्ध है। भूमि की गति, रेल की गति, रेल विभाग के कर्मचारियों की आदतें परन्तु हम यह भविष्यवाणी नहीं कर सकते कि अमुक व्यक्ति जो यात्रा कर रहा है, हमारा मित्र है अथवा शत्रु। हमको मारने आ रहा है अथवा मिलने आ रहा है क्योंकि उस यात्री के विचारों का रेल की गति से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि हम उसके विचारों को जानना चाहते हैं तो हमको और बातों का गणित लगाना पड़ेगा। हम उसके बारे में भी कुछ न कुछ भविष्यवाणी कर सकते हैं परन्तु रेल की गति को देखकर नहीं प्रत्युत दूसरी बातों के आधार पर। जो व्यक्ति किसी यात्री के भाग्य का निर्णय रेलवे की समय सारणी को देखकर करना चाहता है उसको तो हम पागल ही कहेंगे। इसी प्रकार यह सम्भव है कि हम किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य विषयक कुछ भविष्यवाणी कर सकें अथवा यह भी बता सकें कि जिस स्त्री से वह विवाह रचा रहा है वह उसके सुख का साधन बनेगी अथवा दु:ख का परन्तु इस बात को जानने के लिए व्यक्ति का पिछला स्वास्थ्य अथवा स्त्री की पुरानी आदतों अथवा स्त्री के कुल के विचारों का अनुमान लगाना होगा। इस बात के लिए सूर्य, चन्द्र, बुध, मंगल आदि की ओर देखना बड़ी भयानक भूल होगी। इसी के लिए एक उर्दू कवि ने लिखा है :-

अंजम शनास को भी खलल है दिमाग का।
पूछो अगर जमीं की कहे आसमां की बात।।

अर्थात् ज्योतिषी जी के मस्तिष्क में भी कुछ गड़बड़ अवश्य है। आप धरा की बात पूछते हैं तो वह आकाश की बताने लगता है। बहुत से लोग यह कहा करते हैं कि जब सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की भविष्यवाणी की जाती है तो ज्योतिष के ग्रन्थों से इसी प्रकार से मानवीय भाग्य की भविष्यवाणी क्यों नहीं की जा सकती?इस धोखे में जनसाधारण आ जाते हैं परन्तु यह बात तो उसी प्रकार की है जैसे मोहन की नाड़ी देखकर गोपाल के ज्वर के बारे में भविष्यवाणी की जाये। सूर्यग्रहण कोई पृथक बात नहीं। सूर्य और भूमि की गति की एक विशेष अवस्था का नाम सूर्यग्रहण है। इसलिए भूमि व चन्द्र की गतियों की गणना से देखा जा सकता है कि सूर्यग्रहण कब लगेगा। उसी प्रकार से जैसे आप रेल की चाल से पता लगा सकते हैं कि अमुक गाड़ी देहली कब पहुंचेगी परन्तु मनुष्य के जीवन की परिस्थितियां तो बहुत ही भिन्न हैं। ज्योतिषी यह तो जान सकता है कि चन्द्रोदय कब होगा क्योंकि चन्द्र की गति का उसे पता है परन्तु ज्योतिषी यह कैसे जान सकता है कि सीता के पेट से पुत्र जन्मेगा अथवा पुत्री?सोहन बी. ए. परीक्षा में सफल होगा अथवा विफल?

– गंगा ज्ञान सागर पुस्तक से साभार

आर्य समाजवाद और धर्मनिरपेक्षवाद

– स्वामी अग्निवेश

प्रस्तुत लेख स्वामी अग्निवेश जी की कलम से 1972 में उस समय लिखा गया था जब प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ स्वामी जी आर्य सभा नामक संगठन के माध्यम से आर्य राष्ट्र बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। समाज में क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए संघर्षरत स्वामी जी ने समाज को झकझोर देने वाले कई लेख लिखे जिसमें आओ धर्म की चर्चा करें, आर्य समाज और राष्ट्रवाद, वैदिक समाजवाद और भ्रष्टाचार, महर्षि दयानन्द और वैदिक समाजवाद बहुत चर्चित हुए। उक्त लेख तथा अन्य कई लेख बाद में ''महर्षि दयानन्द का वैदिक समाजवाद'' नामक पुस्तक में संग्रहीत कर प्रकाशित किये गये। स्वामी जी की कलम से लिखे गये यह क्रांतिकारी विचार समाज में काफी चर्चा का विषय बने।

वर्षों पूर्व देश में वर्तमान धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध स्वामी जी के मस्तिष्क में उपजे विचारों से ''आर्य समाजवाद और धर्मनिरपेक्षवाद'' नामक लेख का प्रारूप जन्मा जिसे पढ़कर आप वर्तमान समय में इस लेख की प्रासंगिकता के बारे में सोचने के लिए विवश हो जायेंगे।

''महर्षि दयानन्द का वैदिक समाजवाद'' नामक पुस्तक में संग्रहीत स्वामी जी के क्रांतिकारी विचारों से आप लाभ उठाना चाहते हैं तो यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक का मूल्य केवल मात्र 15 रुपये रखा गया है। पुस्तक मंगाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 तथा 7 जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली-1 से दूरभाष नं.-011-23367943 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

– सम्पादक

प्रश्न – आर्य समाजवाद धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार करता है या नहीं?

उत्तर – कदापि नहीं।

प्रश्न – तो क्या आप आर्य समाजवाद के नाम पर साम्प्रदायिकता का राज्य लाना चाहते हैं?क्या आप सभी हिन्दुओं पर, मुसलमानों पर, ईसाइयों पर, सिक्खों और जैनियों पर अपना आर्य धर्म थोपना चाहते हैं?

उत्तर – जब हम किसी को हिन्दू या मुसलमान या ईसाई या सिक्ख अथवा जैनी नहीं मानते तो हमारा उन पर कुछ थोपने का सवाल ही नहीं उठता। हमारी नजर में या यों कहें कि आर्य समाजवाद की नजर में मानवता को इस प्रकार के मत-मतान्तरों, मजहबों आदि में बांटना ही सबसे बड़ी साम्प्रदायिकता और सबसे बड़ी संकीर्णता है। आर्य समाजवाद मानव-मात्र को केवल आर्य और दस्यु में विभाजित करता है, आर्य कमेरा है और दस्यु लुटेरा है, आर्य श्रमिक है (बौद्धिक श्रम अथवा शारीरिक श्रम करने वाला) और दस्यु इन श्रमिकों का शोषण करने वाला शोषक है। हमारा उद्देश्य बिल्कुल साफ है – हम किसी तथाकथित हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि पर कोई नया सम्प्रदाय या मजहब नहीं थोपना चाहते। परन्तु हम दुनियां के सभी शोषकों पर आर्यों का अर्थात् सदाचारी श्रमिकों का शासन अवश्य थोपना चाहते हैं।

रहा सवाल धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को न मानने का। सबसे पहले हमारे दिमाग में धर्म शब्द की सही व्याख्या होनी जरूरी है। दुनियां में सबसे अधिक अन्याय इस धर्म शब्द के साथ हुआ है। धर्म शब्द की सही व्याख्या के अनुसार धर्म का मतलब वे सभी नियम, सिद्धान्त और कानून हैं जिससे हमारा जीवन और हमारा यह समाज धारण किया जाता है। आर्य वांङ्मय में धर्म की व्याख्या महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में करते हुए कहा – **यतो अभ्युदय निश्श्रेयस् सिद्धि स धर्मः।** जिन बातों से अथवा जिन कार्यों से हमारी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है वे सभी बातें और वे सभी कार्य धर्म हैं। उदाहरण के लिए रोटी खाना, कपड़े पहनना, मकान में रहना, खेलना-कूदना, पढ़ना-लिखना, मिथ्याचरण को छोड़ सत्याचरण करना लोभ-लालच को छोड़, त्याग की भावना स्वीकार करना आदि बातें ही धर्म हैं। इसी बात को मनु ने धर्म के दस लक्षण गिनाते हुए बड़े सरल किन्तु स्पष्ट शब्दों में कहा –

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकम् धर्म लक्षणम्॥

इस तरह धैर्य, सहनशीलता, अस्तेय, संयम, स्वच्छता, इन्द्रियों को वश में करना, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध आदि जो गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए, ये ही धर्म के लक्षण हैं। इन गुणों के बिना कोई भी मानव समाज कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता। भौतिक विकास में तत्पर व्यक्ति को भी इन्हीं गुणों की उपासना करनी पड़ती है। महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग के अनुसार आध्यात्मिक साधना ही आठ सीढ़ियां हैं। यथा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये सभी बातें मनुष्य द्वारा समाज में रहते हुए शारीरिक एवं मानसिक संतुलन बनाये रखकर विकास करने के लिए आवश्यक तथा वैज्ञानिक सिद्धान्त हैं। इन सिद्धान्तों की उपेक्षा न कोई हिन्दू कर सकता, न कोई मुसलमान या ईसाई कर सकता है। वेद इन्हीं सार्वभौम वैज्ञानिक सिद्धान्तों की बीजरूप में, सूत्ररूप में व्याख्या करता है। वेद का अर्थ ही ज्ञान है। इसमें कोई ऐसी बात नहीं हो सकती जो बुद्धि, तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरी न उतरे और जो मानवमात्र के लिए उपयोगी न हो। इसके ऊपर भी हमारी यह मान्यता है कि हम सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहेंगे। धर्म के इस व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए ही हमारे देश में कानून की पुस्तकों को धर्मशास्त्र की संज्ञा दी गई।

समय-समय पर इस कानून और सामाजिक न्याय की पकड़ जब ढीली पड़ने लगी तो कतिपय ऐतिहासिक महापुरुषों ने देशकाल की परिस्थिति के अनुसार इन व्यवस्थाओं की उपादेयता पर जोर दिया। ऐसे महापुरुषों के भक्तों ने कुछ उनकी और कुछ अपनी बातें जोड़कर नये सम्प्रदाय और मत-मतान्तर खड़े कर दिये। इन नये सम्प्रदायों और संकीर्ण मतावलम्बियों को धर्म का नाम लेकर अपनी दुकान खड़ी करने में सुविधा प्रतीत हुई और इस तरह धर्म के वैज्ञानिक अर्थ में विकृति आने लगी। इन विकृति का एक स्पष्ट परिणाम यह निकला कि जो धर्म सामाजिक न्याय और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित था वह अब नाना सम्प्रदायों के पैगम्बर, अवतार, मसीहा, तीर्थंकर और गुरु की होड़ में यह आवश्यक बन गया कि प्रत्येक सम्प्रदाय अपने 'मसीहा' को दूसरों की तुलना में अलौकिक सिद्ध करे, चाहे उस अलौकिकता की सिद्धि में अन्धविश्वास और पाखण्ड का भी सहारा क्यों न लेना पड़े। सिद्धान्तों को गौण बनाकर व्यक्तिपूजा को प्राथमिकता देने का यह दुष्परिणाम हुआ कि आज 'हिन्दू धर्म' में से राम, कृष्ण आदि अवतारों को निकाल देने पर यह धर्म निर्जीव हो जाता है, इस्लाम में से मोहम्मद साहब को हटा देने पर इस्लाम लड़खड़ा जाता है, ईसामसीह पर ईमान लाये बगैर ईसाइयत का महल ढह जाता है, ''बौद्धधर्म में से गौतम बुद्ध को तिरोहित कर देने पर बौद्धधर्म भी अन्धकार में विलीन हो जाता है। इस व्यक्तिवाद पर आधारित धर्मों की परम्परा ने आगे चलकर ऐसे-ऐसे धूर्त, पाखण्डी और प्रपंची गुरुओं योगियों और बालयोगियों को प्रश्रय दिया है जो हमारे समाज और राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं।''

आज हमारे सामने धर्म के नाम पर दोनों स्वरूप विद्यमान हैं – एक वैज्ञानिक है तो दूसरा अवैज्ञानिक है। एक सार्वभौमिक है तो दूसरा साम्प्रदायिक है। एक उदार है तो दूसरा संकीर्ण है। एक बुद्धि, तर्क और विज्ञान की कसौटी पर कसा हुआ है तो दूसरा बुद्धि, तर्क और विज्ञान को तिलांजलि देकर अंधश्रद्धा और गुरुडम पर टिका हुआ है। पहला स्वरूप शोषण का दुश्मन है तो दूसरा शोषण का दलाल है।

धर्म निरपेक्षता के प्रतिपादकों का विचार है कि राज्य को अथवा सरकार को धर्म के मामले में उदासीन रहना चाहिए। किसी का पक्ष न लेते हुए तटस्थ रहना चाहिए। 'हर प्रकार के धर्म को' पनपने की छूट देनी चाहिए। आर्य समाजवाद इस विचारधारा से असहमत है। आर्य समाजवाद की मान्यता है कि यदि धर्म के वैज्ञानिक, सार्वभौमिक, उदार एवं तर्कसंगत स्वरूप को नहीं स्वीकार करते तो हमारी उन्नति अवरूद्ध हो जाती है। यदि समाज में संयम और सदाचार को प्रतिष्ठित न किया गया तो दुराचार, कदाचार, भ्रष्टाचार और व्यभिचार अपनी जड़ें जमा लेंगे। यदि हम अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह को प्रतिष्ठित नहीं करते तो निश्चित रूप से हिंसा, शोषण और विषमता का दानव दनदनाता रहेगा और समाजवाद के बदले पूंजीवाद का पाखण्ड पनपता चला जायेगा।

जहां एक ओर हम धर्म के इस वैज्ञानिक और विधायक स्वरूप को प्रतिष्ठित करने का प्रयास करेंगे वहां दूसरी ओर धर्म के नाम पर पैदा हुई विकृतियों को समाप्त करने का प्रयास करेंगे। यदि निरपेक्षता का ढकोसला अपनाकर हम धर्म के नाम पर पनप रहे अन्धविश्वास, गुरुडम, भाग्यवाद और पूंजीवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष नहीं करेंगे तो वैदिक समाजवाद की सारी उपलब्धियां हासिल करनी ही बहुत कठिन हो जायेंगी और जो थोड़ी-बहुत उपलब्धियां होंगी भी उन पर भी, पानी फिर जायेगा।

प्रश्न – आपकी यह वेद-वर्णित धर्म की व्याख्या बहुत उपयुक्त और राष्ट्रोन्नति के लिए अनिवार्य भी है। इसे हम धर्म कह लें या सदाचार अथवा नैतिकता कह लें। इन मानवीय गुणों का विकास तो होना ही चाहिए और इसलिए ऐसे धर्म से निरपेक्ष या उदासीन होना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। परन्तु अन्य सम्प्रदायों के लोगों को भी साथ मिलाने के लिए क्या यह जरूरी नहीं होगा कि हम उन्हें ''उपासना पद्धति की स्वतंत्रता'' देकर खुश रखें। कोई मन्दिर में जाता है या कोई मस्जिद या चर्च में जाता है तो जाता रहे – धर्म उसका व्यक्तिगत मामला बना रहे और आर्थिक तथा राजनैतिक लड़ाई में वह धर्म का दखल न करें।

उत्तर – इस तुष्टिकरण की नीति से क्षणिक लाभ तो हो सकता है और इस नीति का अवलम्बन आरम्भ में आवश्यक भी प्रतीत हो सकता है पर इसी नीति के द्वारा राष्ट्र का सही मार्ग दर्शन नहीं हो सकता। ''उपासना पद्धति की स्वतन्त्रता'' के नाम पर अनेक मत-मतान्तरों को खुश करने का प्रयास तो किया जा सकता है पर बिना अंकुश के यह स्वतंत्रता समाज की प्रगति में बाधक भी बन सकती है।

उदाहरण के लिए जो परमात्मा का उपासक मन्दिर की मूर्ति के सामने सवा रुपये के लड्डू की भेंट चढ़ाकर सवा लाख का मुकदमा जीतना चाहता है, क्या वह सरकारी अदालत में अपना काम निकालने के लिए सवा सौ रुपये की घूस देते हुए संकोच करेगा?जिस देश में उपासना के नाम पर करोड़ों भूख से बिलबिलाते नंगे बच्चों की पेट पर लात मार कर मन्दिर की पाषाण-प्रतिमा को दूध से नहलाया जाता है, वहां करोड़ों मेहनतकश मजदूरों को कड़कती सर्दी में सड़कों पर ठिठुरता छोड़कर पत्थर के भगवानों के लिए विशाल मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों का निर्माण किया जाता है, जहां कानून की नजर से छिपकर किए गये पापों से छुटकारा पाने के लिए गंगा में डुबकी लगाई जाती है या मसीहाओं और पैगम्बरों पर ईमान लाया जाता है, उस देश के औसत नागरिकों के हृदय में क्या कभी चरित्र के प्रति निष्ठा, भ्रष्टाचार के प्रति विद्रोह और मानवता के प्रति अपने कर्तव्य का बोध हो सकता है?जिस देश में परमात्मा की उपासना के नाम पर रामनाम की माला हाथ में लेकर जाप किया जाता है –

अजगर करें न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गया, सबके दाता राम॥

क्या उस देश की जनता कभी खून-पसीना एक करके राष्ट्र में आर्थिक समृद्धि लाने के लिए जी

शेष पृष्ठ 11 पर

thearyasamaj.org

मासूम गिरोहों की दिल्ली

– प्रियंका दुबे

गर्मियों की एक दोपहर, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली-गुवाहाटी राजधानी एक्सप्रेस अपनी यात्रा पूरी कर चुकी है। यात्रियों को प्लेटफार्म पर उतारने के बाद खाली हो चुकी ट्रेन धुलाई-सफाई के लिए रेलवे स्टेशन के पीछे बने यार्ड की तरफ बढ़ रही है, अचानक एक कोच के दरवाजे पर 14-15 साल का एक लड़का लटकता नजर आता है, हमें देखते ही वह जोर से हाथ हिलाता है और लहराते हुए चलती ट्रेन से उतर जाता है, उसके हाथ में फटी पन्नियों और प्लास्टिक की बोतलों से भरा एक मटमैला बोरा है, बुरी तरह घिस चुकी हाफ पैंट और लगभग चीथड़ों में तब्दील एक बदरंग टी-शर्ट पहने इस लड़के के शरीर के लगभग हर हिस्से पर चोटों के निशान दिखते हैं, खास चमड़ी के कटने से बनने वाले ये निशान उसके शरीर पर जमी मिट्टी, धूल और गंदगी के परतों को चीरते हुए बाहर झांक रहे हैं, अपने कान पर जमे खून के ताजा थक्कों से बेखबर वह लड़का मुस्कुराते हुए हमारे सामने आकर खड़ा हो जाता है, थोड़ी कोशिशों के बाद वह थोड़ा और सहज होता है और सबसे पहले अपना मौजूदा नाम रोहन बताता है।

रोहन से यह हमारी दूसरी मुलाकात है। पहली मुलाकात बस नाम के लिए हुई थी। हमें देखते ही वह भागने लगा था, फिर जब हमने उसे आश्वस्त करते हुए बुलाया तो वह आया तो जरूर, लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी हमसे बात करने के लिए तैयार नहीं हुआ। इस बार लगता है कि उसका हम पर कुछ भरोसा जमा है।

साथ-साथ लोहे की पटरियां पार करते हुए हम स्टेशन के आखिरी छोर पर बने प्लेटफार्म पर बैठ जाते हैं, अपने बारे में बताते हुए रोहन कहता है, मुझे नहीं पता मेरा घर कहां है, मुझे नहीं मालूम मैं कहां से आया हूं, पहले तो मेरा कोई नाम भी नहीं था, स्टेशन पर लोग मुझे लूला, पगला या गंजा कहते थे; ये नाम तो स्टेशन पर काम करने आने वाले भैया ने दिया है, मुझे आज तक घर से कभी कोई लेने नहीं आया, जब से याद पड़ता है, तब से स्टेशन पर ही रहता हूं।

रोहन बताता है कि वह नशा करता है, उसने कई चोरियां भी की हैं और गाहे-बगाहे लोगों को ब्लेड या चाकू भी मार चुका है। अपराध की दुनिया में अपने सफर के बारे में वह कहता है, सब सीख जाते हैं, दीदी जब मैं छोटा था तो बड़े लड़कों ने सिखाया। चलती ट्रेन में चढ़ना, पॉकेट मारना, पर्स उड़ाना, चाकू मारना सब यहां के गैंगों में बड़े लड़के छोटे बच्चों को सब सिखाते हैं, मैं तो फिर भी ठीक हूं, स्टेशन के दूसरे लड़कों और कबाड़ी वालों ने तो काम के टाइम कइयों को निपटाया है। फिर यही नए बच्चे भी सीख जाते हैं।

आती गर्मियों के आसमान में धूप ढलान की ओर बढ़ती है, शाम होने तक रोहन हमें अपनी रहस्यमयी दुनिया के कई किस्से सुनाता है। बातचीत के दौरान साफ होता है कि अनजाने में यह मासूम बच्चा लगभग संगठित तरीके से चलने वाले बच्चों के एक ऐसे आपराधिक गिरोह का हिस्सा बन चुका है जिसकी कमान वयस्क अपराधियों के हाथों में है, इस कहानी का सबसे स्याह पहलू यह है कि वह अकेला नहीं है। अपराध के जाल में फंस कर

दिल्ली में एक तरफ जहां तमाम बच्चे रेलवे स्टेशनों पर होने वाली लूटपाट और चाकूबाजी में शामिल, आपस में होड़ करते समूहों के तौर पर मौजूद हैं, वहीं शहर की लाल बत्तियों पर कार पंचर करके सामान चुराने वाले गिरोहों के रूप में भी इनकी सक्रियता देखी जा सकती है, एक तरफ राजधानी के सभी प्रमुख कबाड़ बाजारों में कबाड़ व्यापारियों की शह और मुश्किल परिस्थितियों का गठजोड़ कबाड़ बीनने वाले ज्यादातर बच्चों को अपराध के अंध-कूप में धकेल रहा है, तो बीड़ी और सिगरेट से शुरू होने वाले नशे को स्मैक और कोकीन तक पहुंचा कर बच्चों से चोरियां, डकैतियां और हत्याएं तक करवाने वाले अपराधियों का भी एक पूरा नेटवर्क शहर में सक्रिय है। नशा और चोरी-चकारी करते-करते कई बच्चे खुद भी मासूम बच्चों को नशे का आदी और अपराधी बनाने वाले कारोबार का हिस्सा बन जाते हैं।

अपना बचपन गंवा रहे रोहन जैसे सैकड़ों अन्य बच्चों की कहानियां दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में बिखरी पड़ी है।

अपनी दो महीने लंबी तहकीकात के दौरान तहलका ने इस मसले से जुड़ी कई छोटी-बड़ी जानकारियों और उलझे हुए बिन्दुओं को जोड़ा। इससे अलग-अलग जगह, परिस्थितियों आदि में काम करने वाले बच्चों के करीब पांच प्रमुख आपराधिक गैंगों की एक चौंकाने वाली तस्वीर उभरी, दिल्ली में एक तरफ जहां तमाम बच्चे रेलवे स्टेशनों पर होने वाली लूटपाट और चाकूबाजी में शामिल, आपस में होड़ करते समूहों के तौर पर मौजूद हैं, वहीं शहर की लाल बत्तियों पर कार पंचर करके सामान चुराने वाले गिरोहों के रूप में भी इनकी सक्रियता देखी जा सकती है, एक तरफ राजधानी के सभी प्रमुख कबाड़ बाजारों में कबाड़ व्यापारियों की शह और मुश्किल परिस्थितियों का गठजोड़ कबाड़ बीनने वाले ज्यादातर बच्चों को अपराध के अंध-कूप में धकेल रहा है, तो बीड़ी और सिगरेट से शुरू होने वाले नशे को स्मैक और कोकीन तक पहुंचा कर बच्चों से चोरियां, डकैतियां और हत्याएं तक करवाने वाले अपराधियों का भी एक पूरा नेटवर्क शहर में सक्रिय है। नशा और चोरी-चकारी करते-करते कई बच्चे खुद भी मासूम बच्चों को नशे का आदी और अपराधी बनाने वाले कारोबार का हिस्सा बन जाते हैं।

मासूम बच्चों को अपराध की दुनिया में धकेलने वाले अपराधी घर से भाग कर आने वाले और गुमशुदा बच्चों के साथ-साथ तस्करी के शिकार बच्चों को अपना पहला शिकार बनाते हैं, साथ ही काम की तलाश में छोटे शहरों और कस्बों से पलायन करके दिल्ली का रुख करने वाले मजदूरों के बच्चे भी जाने-अनजाने इन गिराहों के जाल में फंस रहे हैं।

बच्चों के नियोजित अपराधीकरण को लेकर अगस्त, 2012 में दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर करने वाले युवा अधिवक्ता अनंत अस्थाना कहते हैं, बात चाहे किसी भी तरह के अपराध में शामिल बच्चों की हो, वयस्क अपराधी अपने फायदे के लिए इनका इस्तेमाल करते हैं, धीरे-धीरे ये बच्चे भी अपराध की अंधेरी दुनिया का हिस्सा बन जाते हैं। हालांकि इन बच्चों को अपराध में झोंकने वाले वयस्क अपराधियों के साथ-साथ तेजी से पनप रहे बच्चों के इन आपराधिक गिराहों के बारे में जानकारी अभी भी सीमित ही है।

आगे के पन्ने दिल्ली में सक्रिय संगठित अपराधियों के जाल में फंसे उन बच्चों की कहानियां कहते हैं जिन्हें इन अपराधियों के लालच और सभ्य समाज व व्यवस्था की आपराधिक उदासीनता ने अपराध की अंधेरी गलियों में धकेल कर उनके वापस आने वाले रास्ते बंद कर दिए हैं।

बिना एक बार भी यह सोचे कि इस प्रक्रिया में हम भविष्य में उनके बड़े खूंखार अपराधियों में तब्दील होनेकी पूरी पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं, और उसके बाद शायद उनसे पीड़ित होने की भी।

कबाड़ी गैंग - दिल्ली के ओल्ड-सीमापुरी इलाके में बसी एफ ब्लाक झुग्गी बस्ती से लगभग 100 मीटर पहले ही रिक्शावाला हमें उतार देता है। पूछने पर बताया जाता है कि आगे दिल्ली की सबसे बड़ी और आपराधिक गतिविधियों के लिए बदनाम कबाड़ी बस्ती है, ज्यादातर रिक्शेवाले वहां तक सीधे जाना पसंद नहीं करते, मोहल्ले की ओर जाती सड़क पर आगे बढ़ते ही धूप और धूल भरी जमीन पर मुर्गों के कटे हुए लहूलुहान पंख, जहां-तहां पड़े बालों के गुच्छे और कतार में रखी कबाड़े से भरी बड़ी-बड़ी बदरंग बोरियां नजर आती हैं, जिंदा तत्वों के धीरे-धीरे नष्ट होने से पैदा होने वाली एक तीखी सड़ांध हमें झकझोरते हुए बताती है कि हम दिल्ली की सबसे पुरानी कबाड़ी बस्ती में दाखिल होने वाले हैं। अंदर छोटी-छोटी गलियों के किनारे बनी दड़बेनुमा खोलियों में बच्चे कभी कबाड़ साफ करते हुए तो कभी नशे के इंजेक्शन लेते नजर आते हैं। सिर्फ छह सात-फुट लंबे-चौड़े कमरे में छज्जा सा डालकर उसमें 6-7 लोगों का परिवार गुजारा करता है। आगे बढ़कर जब हम पहला दरवाजा खटखटाते हैं तो पीली रोशनी में डूबे हुए कमरे में दो लड़के ड्रग्स का इंजेक्शन लगाते हुए दिखते हैं, उनके पीछे बैठी दो लड़कियां अपना नाम रजिया और फरहा बताती हैं। अपने हाथों में खाने की जूठी थालियां उठाए वे यह भी बताती हैं कि आज का कबाड़ साफ

शेष पृष्ठ 10 पर

thearyasamaj.org

An Industry Gone Mad

Using Waste to CUT COSTS

FEED is the most expensive part of livestock production, ranging from 60-70% of total production cost. (Stephanie Mercier in "Review of US Farm Programs," AGree, November 2011). Therefore the use of less costly ingredients that still meet the nutritional requirements of the animal is another major trend in the animal feed and animal production industries. Including material considered as waste in animal feed has been a frequent strategy of the feed industry. (Johns Hopkins Center for a Livable Future, Bloomberg School of Public Health in "Feed for Food-Producing Animals: A Resource on Ingredients, the Industry, and Regulation", 2007)

INDUSTRIAL agriculture is one of the top 4 things for which future generations will condemn us," says philosopher Kwame Anthony Appiah, professor at Princeton University. Indeed, modern animal farming has been described by some as an industry gone mad. Here's why.

What Chickens Eat

IF allowed to roam about, chickens will eat grains, seeds and insects. But factory-farmed chickens are fed toxic arsenic (a cancer-causing compound), and a frightening elixir of drugs that include caffeine, banned antibiotics and even Prozac(a "feel good" antidepressant drug).

2 recent studies conducted by scientists at Johns Hopkins' Bloomberg School of Public Health and at Arizona State University found that chickens and turkeys from factory farms may be dosed up with caffeine, Benadryl (cough mixture), arsenic and several antibiotics that have been banned from use in poultry in the US since 2005.

Co-author Keeve E. Nach "man of Johns Hopkins told the New York 'Times that he and his fellow scientists were "floored" by what they found.

The studies, published in the journals Environmental Science & Technology and Science of the Total Environment, didn't study chicken meat but instead examined feather meal, which is a byproduct of poultry processing.

According to the first paper's abstract, "feathers are converted by rendering into feather meal and sold as fertiliser and animal feed, thereby providing a potential pathway for reentry of drugs into the human food supply". The researchers studied the feather product because anti-microbials have "the potential to bioaccumulate in poultry feathers".

The first study found that the feather meal samples they tested routinely contained the banned antibiotics known as fluoroquinolones, such as the drug Cipro. According to the Times, fluoroquinolones were banned from use in poultry because they can breed antibiotic-resistant superbugs.

The study also found that most samples contained caffeine and 1/3 of the samples contained the active antihistamine ingredient that is found in benadryl. Many samples also contained acetaminophen, the active painkilling ingredient in Tylenol.

As if that weren't enough, the samples tested that originated in China also contained the same active ingredient as the antidepressant Prozac.

The second study found that almost every sample studied contained roxarsone, an organo-arsenic compound.

So why are farmers using these drugs? The caffeine keeps chickens awake so they eat more. The Benadryl, acetaminophen and Prozac reduce their anxiety, which can speed up their growth and improve the taste of their meat. The arsenic is used to give poultry meat a pleasant pink colour. It also reduces infections in chickens.

The researchers say that the use of all of these chemicals could explain why drug-resistant superbugs are still at high levels in commercial poultry more than half a decade after the ban was put in place.

They also say the arsenic "may pose additional risks to humans as a result of its use as an organic fertiliser and when animal waste is managed". (Source: Mother Nature Net-work, 5 April 2012)

ABOUT ARSENIC. Arsenic has been used for over 70 years in animal agriculture. In the US, feeding animals arsenic as a way to promote growth and weight gain with less feedhas been practised since thu 1940s. Arsenic apparently helps fight some diseases and aids in tissue and vascular development, making the muscle of animals look more appealing to consumers.

Arsenic has direct links to cancer and the US has recently scaled down its use in animal feed because of this.

What Cows Eat

Feedlot cows are fed detrimental amounts of grain, lots of antibiotics, filth and all kinds of crap—including chewing gum! Here's a selection of articles with the shocking details.

- IN large-scale indoor cattle-breeding, cows are fed a "chicken litter" (which in cludes its faeces) and indirectly eat parts from cows. Dr Joseph Mercola, who runs a popular website distributing health and wellness information, explains the connection in an article, "Is the Meat You Are Eating Being Fed Animal Feces?" (30 June 2012).

Chicken litter, a rendered down mix of chicken manure, dead chickens, feathers and spilled feed, is marketed as a cheap feed product for cows. The beef industry likes it because it's cheaper than even corn and soy, so an estimated 2 billion pounds are purchased each year; yes, this is a very serious amount of this product being fed to animals (in the US).

As if the idea of your burger being the product of manure and feathers isn't unsettling enough, about one-third of the chicken litter concoction is spilled feed, which includes cow meat and bone meal often used to feed chickens but which is supposed to be off limits for cows.

However, any cow that eats chicken litter may also be consuming अगले पृष्ठ पर जारी है

thearyasamaj.org

आर्य नेता सेवाराम पटेल का निधन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सेवाराम पटेल गत दिनों स्वर्ग सिधार गये। नागदा जंक्शन जिला-उज्जैन आर्य समाज मंदिर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अनेक नेताओं ने अपने उद्गार प्रकट किये। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के लम्बे समय तक प्रधान रहते हुए श्री सेवाराम पटेल ने अपने दायित्व का कुशलता के साथ निर्वहन किया। जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं संकीर्णता के वे प्रबल विरोधी थे। अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध किसान एवं जननेता होने के नाते विविध सामाजिक संगठनों से जुड़कर श्री सेवाराम जी समाज सुधार के कार्यों में सदैव सक्रिय रहते थे। उनके व्यक्तित्व की एक अलग पहचान थी। आर्य समाज के सभी शीर्षस्थ नेताओं, विद्वानों एवं उपदेशकों से उनका सीधा सम्पर्क एवं परिचय था। आर्य समाज नागदा जंक्शन के माध्यम से समय-समय पर वे विविध गतिविधियां संचालित करते रहते थे। अपने साथियों के साथ कभी-कभी पूरे मध्य प्रदेश की आर्य समाजों का दौरा भी वे कभी-कभी कर लिया करते थे जिससे सभी कार्यकर्ताओं तथा आर्य समाजों के पदाधिकारियों को विशेष उत्साह मिलता था। वर्ष 2005 में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध सर्वधर्म जन चेतना यात्रा में महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा से अमृतसर तक की 15 दिवसीय यात्रा के ऐतिहासिक कार्यक्रम में श्री पटेल जी अपने अन्य साथियों सहित एक वाहन लेकर 15 दिन तक निरन्तर सम्मिलित रहे। जब भी सार्वदेशिक सभा ने कोई बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया तो पटेल जी ने उसमें अपनी प्रान्तीय सभा की ओर से तन-मन-धन से सहयोग किया। श्री सेवाराम पटेल के देहावसान से आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया है तथा समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। नयी पीढ़ी के युवकों को स्व. पटेल जी के जीवन से विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए तथा समाज सेवा के लिए कृत संकल्प होना चाहिए। सार्वदेशिक सभा परिवार, वैदिक विरक्त मण्डल, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजधर्म प्रकाशन, बेटी बचाओ अभियान एवं युवा निर्माण अभियान आदि संगठनों की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए हम शोक संतप्त परिवार के प्रति सान्त्वना व्यक्त करते हैं।

- स्वामी आर्यवेश, संयोजक सार्वदेशिक सभा संचालन समिति

पिछले पृष्ठ का शेष

An Industry Gone Mad

various beef products intended for chickens — the very same feed products that spurred the Mad Cow Disease outbreak in the first place!

• Cattle, dairy cows, goats, bison, and sheep were designed to eat fibrous grasses, plants, and shrubs not starchy, low fibre grains and feedstuffs. When these animals are switched from pasture greenery to grains, many wind up suffering from a number of disorders and painful conditions.

The sickened animals are then given chemical additives, plus constant, low-level doses of antibiotics. Their drugs in turn enter your system when you eat antibiotic-treated animals, setting the stage for drug-resistance in your body, particularly if you're a heavy-duty carnivore. (Source: Mind Body Green)

• A RUMINANT'S gut is normally a pH-neutral environment, best suited to a diet of cellulosic grasses. It is not well suited to a diet of corn and other grains, the primary fare of feedlot cattle.

High in starch, low in roughage and a poor source of calcium and magnesium, corn upsets the cow's stomach, making it unnaturally acidic. Not only is this harmful to the cow — giving it a sort of bovine heartburn or, worse, making it very sick—but it allows a whole range of parasites and diseases to gain a foothold, including the pathogenic E. coli 0157:H7 bacterium.

Making its first appearance a little over 25 years ago, E. coli is now found in the intestines of most US feedlot cattle. By acidifying a cow's gut with corn, we have broken down one of our food chain's barriers to infections. (Source: US Natural Resources Defense Council, in "Top 10 Reasons to Eat Grass-Fed Meat")

• THERE seems to be no end to cost-cutting measures in the modern feedlot. To further lower the cost of feed, which accounts for 60%" or more of the total cost of raising cattle, many cattle are fed "byproduct feedstuffs". This can range from nutritious ingredients such as beet pulp and carrot tops, to junk — stale bread or candy and heat-treated garbage.

As one feedlot operator says: "Byproduct feedstuff is anything that is cheap, keeps the cattle growing and can be found close to the feedlot."

In New York state, chewing gum has been used as a cheap feed supplement. The novel practice was recommended in a 1996 study in the Journal of Animal Science. The study concluded that stale chewing gum — still in its aluminum wrap-pers! — can "safely replace at least 30% of [cattle] growing or finishing diets without impairing feedlot performance or carcass quality."

In other parts of the US, cattle are being finished on stale pizza dough and candy bars, even heat-treated garbage. Feedlot operators drive to the manufacturing plants or municipal landfills and load up their trucks with this yummy fare, or they buy the used goods from middlemen called "jobbers" who offer a more varied buffet.

According to a 21 May, 2007 article in The Wall Street Journal, reliance on junk food has shot up in recent years because the cost of feed corn has doubled due to the increased use of corn for ethanol production.

According to the article, one farmer now feeds his cattle a ration that is 17% stale candy and 3% stale "party mix". Another feeds a 100% byproduct diet, including French fries, tater tots (small potato balls and potato peels.

(Source. "What You Need to know About the Beef Industry" by Jo Robinson, Mother Earth News, February/March 2008)

What Pigs Eat

IN February 2014, the Humane Society of the United States released secretly taped footage of a US hog farm feeding its sows "Piglet smoothie"— a blended slurry of dead baby pigs' flesh. The animals' intestines are ground up and fed back to the sows, which could be their own mothers.

According to the animal rights group, the piglets had died of a contagious pig virus and the "smoothie" was fed to sows at the farm in a bid to immunise the pigs from the highly contagious disease — called Porcine Epidemic Diarrhoea (PED). The illness has killed more than 2 million piglets in 25 states in the US since April 2013.

The group says the practice "appears to be fairly wide-spread" within the industry and calls on the US Department of Agriculture to examine the practice and ban it.

But the director of the American Association of Swine Veterinarians told The New York Times that feeding piglet intestines to sows is legal and safe and doesn't pose a risk of transmitting the illness to humans.

He added that othr hog farmers are choosing to feed diarrhoea from an infected animal to healthy pigs as another way to expose them to PED. (Source: CTV News, 21,2.14}

Hog farmers and veterinarians say that feeding the guts (or stool) of dead piglets back to sows is the only option they've got to keep the dreaded disease from decimating herds and the whole of the US hog supply.

In a statement posted on Facebook, the Kentucky Live-stock Coalition, a group representing farm groups in the state (where the incident took place), called it a "widely accepted and veterinary recommended management practice". (Source : NPR, 20.2.14)

- Utusan Konsumer se sabhar

आर्य समाज हापुड़ जिला गाजियाबाद का त्रिदिवसीय कार्यक्रम उत्साह के साथ आयोजित हुआ

आर्य समाज हापुड़ में 27, 28, 29 अप्रैल, 2014 को त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश डॉ. धर्मवीर परोपकारिणी सभा, आचार्य राजदेव शर्मा आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री अमर सिंह आर्य व्यावर आर्य भजनोपदेशक ने भी अपने विचारों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया। महायज्ञ के ब्रह्मा पद को समाज के धर्माचार्य पं. धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने सुशोभित किया। पहले दिन 26 अप्रैल को विशाल शोभायात्रा निकाली गई। ध्वजारोहण समाज के प्रधान श्री सुन्दर लाल आर्य ने किया। इस महा सम्मेलन में गो संवर्धन सम्मेलन, नारी जागरण सम्मेलन, पाखण्ड खण्डन सम्मेलन, वेद सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, राष्ट्र नव निर्माण सम्मेलन के अतिरिक्त प्रतिदिन प्रातः यज्ञोपरान्त वेद प्रवचनों व गीतों का कार्यक्रम भी चलता रहा। इन सभी कार्यक्रमों में सर्वश्री पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. अनिल आर्य, श्रीयुत राजेन्द्र अग्रवाल सांसद आदि ने पधारकर कार्यक्रम को गरिमामय बनाया। इसी तरह सर्व श्री आनन्द प्रकाश, डॉ. विकास अग्रवाल, श्री सुन्दरलाल आर्य, अजय कुमार शर्मा, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री वेदमित्र आर्य, आर्य बन्धु कंवर पाल आर्य, डॉ. ताराचन्द अग्रवाल, श्री राधारमण आर्य, श्रीमती माया आर्या, श्रीमती राजप्रभा, श्रीमती अल्का सिंहल, पुष्पा आर्या, श्रीमती विमिलेश गर्ग , बीना आर्या, सुश्री राजकुमारी गुप्ता, शशि सिंहल आदि ने कार्यक्रमों में अध्यक्ष एवं संयोजक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम बेहद सफल रहा।

thearyasamaj.org

पृष्ठ–7 का शेष

मासूम गिरोहों की दिल्ली

करने के बाद उन्होंने अभी–अभी अपना खाना खत्म किया है, रजिया और फरहा एक कमरे के अपने इसी घर में खाना खाती हैं, नशे में डूबे अपने भाइयों की लाल आंखों को बर्दाश्त करती हैं और सारी दिल्ली से आए कबाड़ को इसी के एक कोने में बैठकर साफ भी करती हैं।

कुछ दूर और आगे बढ़ने पर गली में हमें कबाड़ बीनने वाले बच्चों का एक झुंड ताश खेलता हुआ नजर आता है। झुंड में लगभग 15 साल का एक लड़का सफेदी (स्याही मिटाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला व्हाइटनर) में भीगा रूमाल सूंघ रहा है, जबकि बाकी पत्ते बांटने में व्यस्त हैं, हमें देखते ही सब पहले कुछ फुसफुसाते हैं, फिर हंसने लगते हैं, कुछ देर की कोशिशों के बाद वे बातचीत के लिए राजी हो जाते हैं, ताश खेल रहे ये सभी बच्चे 12–16 वर्ष के हैं और इन सभी ने छोटी उम्र से ही कबाड़ बीनने का काम शुरू कर दिया था, नशे और मारपीट की आदतों के बारे में बताते हुए 16 साल का रफीक कहता है, हम सभी नशा करते हैं, इंजेक्शन, दारू, फ्लूइड, गांजा, पाउडर... सब कुछ, सबसे पहले तो नशा कबाड़ी वाले ही देना शुरू करते हैं, 'तभी अचानक 14 साल का रवि बीच में ही चिल्लाते हुए कहता है, ''अरे मैं बताऊँ, जब हम कबाड़ बीनने जाते हैं तो थकान होती है, फिर वहां गुटका खाना तो अपने आप सीख जाते हैं, फिर सिगरेट की हुड़क लगती है, सिगरेट से दारू, दारू से गांजा और गांजे से फ्लूइड, जब कबाड़ बेचने जाते हैं तो वहां सेठ फ्लूइड देता है, फिर पाउडर.... सुई, यही है एक कबाड़ी बच्चे की सच्चाई। जान ली, अब जाओ यहां से, अपनी बात खत्म करते हुए रवि लगभग हमें गली के बाहर धक्का देने लगता है, हमें बताया जाता है कि फिलहाल ये बच्चे नशे में हैं और कुछ भी कर सकते हैं, वहां से निकलते ही बस्ती के दूसरे छोर पर हमारी मुलाकात 12–13 साल के अफजल और सुरेश से होती है। दोनों सुबह–शाम कबाड़ बीनने जाते हैं, सबसे पहले तो कबाड़ी वाले खुद ही हम लोगों को फ्लूइड दे देते हैं। वे हम लोगों से चोरियां करवाते हैं और फिर हमें पुलिस से भी बचाते हैं, कबाड़ीवाले हमारे लिए सब कुछ करते हैं इसलिए मेरे साथ के सारे बच्चे उनकी बात मानते हैं। फिर छिनैती, लड़ाई, चाकूबाजी और चोरी–चकारी .... यहां सब कुछ चलता है।

सीमापुरी की कबाड़ी बस्ती से निकलते–निकते यह साफ हो जाता है कि कबाड़ बीनने वाले बच्चे अपने आस–पास के माहौल और अपने कबाड़ी सेठों के संरक्षण में अपराध और नशे की कभी न खत्म होने वाली अंधी गलियों में विचर रहे हैं, इस बस्ती के बच्चों की शिक्षा और पुनर्वास के लिए काम कर रही गैर–सरकारी संस्था आशादीप फांउडेशन से जुड़े एच. के. चेट्टी बताते हैं, यहां कबाड़ा बीनने वाले लगभग 2,500 परिवार रहते हैं, ज्यादातर लोग बांग्लादेश से आए हैं, लेकिन इन्हें शरणार्थी होने तक का दर्जा हासिल नहीं है, पहचान नहीं होने की वजह से इन्हें कोई काम नहीं देता, इसलिए सबने कबाड़ा चुनना शुरू कर दिया, लेकिन ये लोग अपने बच्चों को कबाड़ मालिकों के यहां पनपने वाले नशे और अपराध की संस्कृति से बचा नहीं पाए।

सीमापुरी की ही तरह दिल्ली के जहांगीरपुरी और सराय काले खां इलाकों में ऐसी ही कहानियों से पटी हुई राजधानी की सबसे बड़ी कबाड़ी बस्तियां मौजूद हैं, स्टोरी के दौरान तहलका ने शहर के अलग–अलग हिस्सों में मौजूद इन कबाड़ा बस्तियों के बच्चों और कबाड़ा व्यापारियों से बात की तो अपने मुनाफे के लिए बच्चों को अपराध की दुनियां में धकेल रहे अपराधियों की तस्वीर और पुख्ता

पहले कबाड़ा व्यापारी बच्चों को एक सुरक्षा घेरा देते हैं और फिर उनका शोषण करते हैं, वे कहते हैं, पहले ये लोग सड़क पर रहने वाले बच्चों को काम देते हैं, रहने की जगह और नशा भी देते हैं, इससे बच्चों को इन पर विश्वास हो जाता है, बच्चे इनके लिए सबसे अच्छे होते हैं, वे अपनी मेहनत का पूरा पैसा नहीं मांगते, वफादार होते हैं ओर नशे की लत की वजह से इनके कहने पर धीरे–धीरे चोरियां भी करने लगते हैं।

होने लगी, निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के पीछे बसी सराय काले खां झुग्गी बस्ती में मौजूद कबाड़ा व्यापारियों के यहां काम कर चुका 17 वर्षीय विवेक बताता है, 'सराय काले खां की झुग्गी बस्तियों में तकरीबन सात कबाड़ा व्यापारी हैं, लेकिन फारूख, खाला और शाहिद ही बड़े कबाड़ी वाले हैं, कभी कबाड़ के बदले पैसा मिलता है तो कभी नशा, फिर धीरे–धीरे हम खुद ही खरीदने लगते हैं, निजामुद्दीन दरगाह के पीछे और भोगल में सड़कों पर ही मिल जाता है, विवेक आगे कहता है, यहां बच्चों को सबसे ज्यादा फ्लूइड की लत है, कुछ महीने पहले तक मैं खुद लगभग 20 डबल रोज पी जाता था, एक सेट में फ्लूइड की दो बोतल होती हैं इसलिए उसे डबल कहते हैं, कबाड़ीवाले हमें नशे के लिए चोरियां करने को भी कहते हैं। मेरे कई दोस्तों ने तो इनके कहने पर स्टेशन से बाइक चुराई और दरगाह से कितनों के पर्स उड़ाये, अगर पुलिस का मामला होता है तो कबाड़ी वाले ही हमें बचाते हैं।

बच्चों की इन बातों को अपने मामले में खारिज और दूसरों के मामले में स्वीकार करती, सराय काले खां की प्रमुख कबाड़ा व्यापारी रीना उर्फ खाला कहती हैं, यह सब मेरे यहां नहीं होता, बाजू में वे दूसरे कबाड़ी वाले हैं न, वे सब बच्चों से चोरियां करवाते हैं और उन्हें ब्लेडबाजी, चाकूबाजी सब सिखाते हैं। उनके बच्चे सब नशा करते हैं, वे खुद उन्हें नशा देते हैं और फिर उन्हीं से बाकी बच्चे भी सीख जाते हैं। कबाड़ा बीनने वाले बच्चों और कबाड़ा व्यापारियों के साथ लंबे समय से काम कर रही गैर सरकारी संस्था चेतना से जुड़े संजय गुप्ता बताते हैं कि पहले कबाड़ा व्यापारी बच्चों को एक सुरक्षा घेरा देते हैं और फिर उनका शोषण करते हैं, वे कहते हैं, पहले ये लोग सड़क पर रहने वाले बच्चों को काम देते हैं, रहने की जगह और नशा भी देते हैं, इससे बच्चों को इन पर विश्वास हो जाता है, बच्चे इनके लिए सबसे अच्छे होते हैं, वे अपनी मेहनत का पूरा पैसा नहीं मांगते, वफादार होते हैं ओर नशे की लत की वजह से इनके कहने पर धीरे–धीरे चोरियां भी करने लगते हैं।

ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिए कुछ कर सकने वाले लोगों को इनके साथ और इनके द्वारा जो कुछ हो रहा है उसके बारे में पता नहीं, 20 अगस्त, 2010 को किंग्सवे कैंप स्थित जूवेनाइल जस्टिस बोर्ड (बाल न्यायालय) के एक आदेश में प्रिंसिपल मजिस्ट्रेट जस्टिस बोर्ड (बाल न्यायालय) के एक आदेश में प्रिंसिपल मजिस्ट्रेट अनुराधा शुक्ल भारद्वाज का कहना था कि राजधानी के कबाड़ा व्यापारी अपने मुनाफे के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों में फंसे बच्चों का शोषण कर रहे हैं, किशोर मामलों के अधिवक्ता अनंत अस्थाना की एक विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर दिए गए इस फैसले में ऐसे बच्चों के लिए एक नई बाल कल्याण समिति बनाने का आदेश देते हुए उनका कहना था, यह देखा जा रहा है कि इन कबाड़ा व्यापारियों की वजह से सड़कों पर रहने वाले बच्चों, झुग्गी–बस्तियों में रहने वाले बच्चों या फिर गरीबी, असाक्षरता या किसी प्राकृतिक प्रकोप की वजह से पोषण और देखभाल से दूर रहे बच्चों में नशे और अपराध की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है, ये कबाड़ी वाले बहुत सुनियोजित तरीके से छोटे बच्चों को कबाड़ा बीनने का काम देते हैं, फिर उनसे चोरियां और डकैतियां करवाई जाती हैं। यह सब बच्चों को ड्रग्स, शराब और फ्लूइड के नशे का आदी बनवाकर करवाया जाता है जो उन्हें सबसे पहले इन्हीं कबाड़ा व्यापारियों के पास से मिलता है, यह पूरा माहौल भविष्य में बच्चों के एक खूंखार अपराधी बनने का रास्ता साफ कर देता है.... अपने फैसले में बोर्ड ने पुलिस और संबधित संस्थाओं को बच्चों के इस सुनियोजित अपराधीकरण पर तुरंत कार्रवाई करने और इस चुनौती से निपटने के लिए सख्त निर्देश तो जारी कर दिए लेकिन जमीन स्तर पर कोई कार्रवाई नहीं हो सकी। आज भी सैकड़ों असहाय बच्चे कबाड़ा व्यापारियों में अपने जिंदा रहने की आस देखकर कबाड़ बीनने का काम करते हुए नशे और अपराध के बीच झूल रहे हैं।

– शेष अगले अंक में (तहलका से साभार)

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के तत्वावधान में आर्य युवकों का

विशाल युवा निर्माण शिविर

राजकीय उच्च विद्यालय, ग्राम खटकड़, जीन्द (हरियाणा) में

दिनांक – 2 जून, 2014 से 8 जून, 2014 तक

पूरे प्रदेश के एक हजार युवक भाग लेंगे

नौजवान साथियों! आपको जानकर हर्ष होगा कि गर्मी की छुट्टियों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा की ओर से 2 से 8 जून तक राजकीय उच्च विद्यालय ग्राम खटकड़ जिला–जीन्द में विशाल युवा निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। युवा पीढ़ी में देशभक्ति, ईमानदारी, सेवा, सदाचार एवं ब्रह्मचर्य आदि संस्कार देने के लिए युवा आर्य राष्ट्र निर्माण हेतु योग्य एवं चरित्रवान युवा नेतृत्व तैयार करने के लिए शिविर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। जो भी युवक शिविर में भाग लेगा उसके जीवन की दिशा बदल जायेगी तथा जातिवाद, साम्प्रदायिकता किसी भी प्रकार की संकीर्णता से ऊपर उठकर वह समाज एवं राष्ट्र के प्रति सजग प्रहरी के रूप में एक संस्कारवान नागरिक बन सकेगा। अतः ऐसे होनहार चरित्रवान से हम प्रार्थना करते हैं कि –

1. यदि आपकी आयु 15 वर्ष से अधिक हो चुकी है।
2. यदि आपके हृदय में अपने देश के लिए प्यार, आपकी धमनियों में शहीदों का खून और आपके मन में ब्रह्मचर्य की प्रेरणा जागृत हो चुकी है।
3. यदि आप अपनी ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में व्यर्थ समय गंवाने के बदले सात दिन तक शिविर में रहकर उच्च कोटि के व्यायामाचार्यों से आसन, व्यायाम, दण्ड–बैठक, लाठी, जूडो–कराटे, स्तूप एवं विविध भारतीय व्यायामों का प्रशिक्षण लेकर शारीरिक रूप से बलवान बनने और देश के प्रसिद्ध विद्वानों से आस्तिकता, ब्रह्मचारी जीवन के उद्देश्य, नेतृत्व कला तथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विषयों पर बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना मानसिक विकास करना चाहते हैं। तो आज और इसी समय निर्णय लें कि आप खटकड़ शिविर में अवश्य ही भाग लेंगे। इसके लिए आप अपना प्रवेश पत्र भरकर एवं प्रवेश शुल्क 100 रुपये जमा करवाकर शीघ्र अति शीघ्र अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

शिविर में आपको –

1. शिविर गणवेश (सफेद सैण्डो बलियान, केसरिया रंग की निक्कर, कापी–पेन अपने कद के समान दो जोड़े सफेद पजामा–कुर्ता, तौलिया, ओढ़ने व बिछाने की चद्दर, चम्मच, गिलास, लोटा, थाली आदि आवश्यक वस्तुएं साथ लानी होगी।
2. शिविर में भोजन व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क होगी। किन्तु पंजीयन शुल्क एक सौ रुपये अवश्य देना होगा।
3. 2 जून, 2014 शनिवार को दोपहर 12 बजे तक आपको राजकीय उच्च विद्यालय खटकड़ जिला जीन्द में पहुंचना होगा। तथा 8 जून 2014 (रविवार) को शिविर समाप्ति तक शिविराध्यक्ष के पूर्ण नियंत्रण में रहना होगा।

विशेष नोट : इस शिविर में बॉक्सिंग, शूटिंग, कमांडो ट्रेनिंग, जूडो–कराटे एवं योगासन आदि के उच्च कोटि के प्रशिक्षक, व्यायाम आचार्य एवं योगाचार्य आमंत्रित किए गये हैं।

होनहार युवकों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है। और आप तो ऐसे अवसर की तलाश में थे। अतः इसे हाथ से न जाने दें। अपनी स्वीकृति अथवा विशेष जानकारी के लिए अविलम्ब सम्पर्क करें।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय :– स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

मो.:– 0-9416630916, 9354840454, 9466430772

thearyasamaj.org

पृष्ठ-6 का शेष

आर्य समाजवाद और धर्मनिरपेक्षवाद

तोड़ मेहनत कर सकती है?क्या तथाकथित धर्म की प्रचलित कर्मफल की फिलासफी को मानने वाला और अपनी गरीबी एवं जहालत को पूर्व जन्मों का कर्मफल मानकर सामाजिक अन्याय और आर्थिक शोषण की चक्की में पिसने वाला एक मजदूर कभी इन खून चूसने वालों की हड्डियां चबा जाने के लिए क्रोध से दांत कट-कटा सकता है?यह कौन नहीं जानता कि इस तथाकथित धर्मप्रधान देश की गरीबी तथा सामाजिक गिरावट का मुख्य कारण यहां का दम घोटने वाला दकियानूसी, अन्धविश्वास और लूट पर टिका हुआ धर्म है?''ब्रह्म सत्य और जगत मिथ्या'' का सिद्धान्त प्रतिपादित करने वाले जगद्गुरुओं की उपासक मण्डली ने इस देश की जवानी को कितना काहिल और कमजोर बना दिया- इस बात का प्रमाण हमारा पिछले कई सदियों की गुलामी का इतिहास प्रत्यक्ष है।

क्या यह सच नहीं है कि इस देश की भोलीभाली जनता को बरगलाने के लिए यहाँ नित्य नये अवतार जेम्बों जैटों में हजारों गोरी चमड़ी वाले विदेशी भक्तों के साथ अवतरित होते रहते हैं और पाखण्ड प्रचार से लेकर तस्कर व्यापार तक का सिलसिला सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति के नीचे फलता-फूलता रहता है। जिस देश का मजदूर दाने-दाने को मोहताज होकर दम तोड़ रहा हो वहां धर्म निरपेक्षता की आड़ में एक-एक चण्डी महायज्ञ में 15-15 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हों तो क्या यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि आम जनता की बरबादी में अपना निहित स्वार्थ सिद्ध करने वाली सत्ता के लिए धर्म निरपेक्षता एक कवच का काम करती है।

ये और इस तरह के हजारों प्रश्न हैं जो 'विशुद्ध धार्मिक मान्यतायें' होते हुए भी हमारे सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं से जुड़े हुए हैं और क्रांति की जड़ों को खोखला कर रहे हैं। इसलिए जब तक धर्म के नाम पर फैले हुए इस विष को बाहर निकाल कर बुद्धि और तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाले वैज्ञानिक धर्म का शुद्ध रक्त प्रवाहित नहीं किया जाता तब तक इस म्रियमाण राष्ट्र की रगों में क्रांति का स्फुरण संचारित नहीं हो सकता और राष्ट्रीयता एवं आर्थिक विकास की स्वस्थ परम्परायें अपनी जड़ें नहीं जमा सकतीं।

प्रश्न - मैं आपकी बातों से सहमत होते हुए भी आपको यह सलाह दूंगा कि आप नाहक इस धर्म-अधर्म के पचड़े में न पड़ें। नई तालीम और नई रोशनी वाला नौजवान स्वयं इन धर्म के ठेकेदारों से नफरत करता है। आप जिन बातों को समाप्त करने के लिए इतनी योजना बना रहे हैं वे सभी बातें आधुनिक विज्ञान और भौतिकवाद की चकाचौंध में अपनी मौत आप मर रही हैं। इसलिए क्यों अपने वैदिक समाजवाद में इस धर्म के बखेड़े को शामिल कर नाहक एक बला मोल लेते हैं?

उत्तर - यह दृष्टिकोण भी एक नये खतरे को जन्म देना है। हम धर्म के बिगड़े हुए विकृत स्वरूप को तो मिटाना चाहते हैं पर धर्म को अपनी मौत नहीं मरने देना चाहते। हम नाक पर बैठी मक्खी को तो हटाना चाहते हैं पर नाक को ही काटकर उड़ा देना नहीं चाहते। धर्म के गलत रूप को देखकर धर्म को अफीम कह देना और परमात्मा के पाखण्डी भक्तों की आचारहीनता देखकर परमात्मा की अर्थी निकाल देना कार्ल मार्क्स और लेनिन के अनुयायियों को शोभा दे सकता है पर दयानन्द के सैनिकों को नहीं। ऋषि दयानन्द ने धर्म की ओट में पनप रहे दुराचार की पराकाष्ठा और कुत्सित वाममार्ग की विभीषिका को देखकर भी किसी उतावलेपन में आकर धर्म को अफीम नहीं कहा वरन् वेद के वैज्ञानिक धर्म को समाज के हर पहलू और जीवन की हर सांस के लिए अनिवार्य घोषित किया। यही कारण है कि जीवनभर अवतारवाद, पाखण्डवाद और पोपलीला का खण्ड करने वाले दयानन्द ने आर्य समाज के प्रथम नियम में ही यह घोषणा की कि **सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।** और यही कारण है कि जिस राज्य व्यवस्था के ऊपर वे आर्य समाजवाद की स्थापना का गुरुतर भार रखते हैं उस व्यवस्था को और व्यवस्था के सभासद तब ही हो सकते हैं जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञान आत्मविद्या अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म स्वभावरूप को यथावत् जानने वाले रूप ब्रह्मविद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ (कहना और पूछना) सीखकर सभासद या सभापति हो सकें। सब सभासद और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रखक के सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटे-हटायें रहें। इसलिए रात-दिन नियत समय पर योगाभ्यास भी करते हैं। क्योंकि जो जितेन्द्रिय अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर प्रजा है इस) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।'' - सत्यार्थ प्रकाश छठा समुल्लास। इसलिए हमारी यह निश्चित मान्यता है कि धर्म निरपेक्षता का नारा लगाने वाले सभी राजनैतिक दल खोखले और छिछले हैं और हमारा यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि आर्य समाजवाद की राजनीति धर्म निरपेक्ष नहीं वरन् धर्म सापेक्ष है और हमारी राजनीति भी कोरी राजनीति नहीं, वरन् राजधर्म है।

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुगुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।
2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मानवीय सर्वांगीण विकास एवं आत्मज्ञान शिविर

शिविर स्थल :- अग्निलोक, ग्राम-बहलपा, तहसील-सोहना, जिला-गुड़गांव (हरि.)

दिनांक : 1 से 6 जुलाई, 2014

मनुष्य का शरीर ईश्वर की ऐसी अद्‌भुत रचना है जिसमें आत्मा के साथ सामाजिक उन्नति करने वाली शक्तियाँ भी निहित हैं जो समुचित वातावरण न मिलने के कारण सुप्त प्रायः रहती हैं। जिसके कारण समाज में विभिन्न प्रकार की अमर्यादित शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं और समाजसेवी लोग चाहते हुए भी उनसे समाज को मुक्त नहीं करा पाते।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ऋषियों मुनियों एवं वेदों की बताई पद्धति को अपनाकर सच्चरित्र मनुष्यों के भीतर सोई उस सत्यानुगामिनी बलवती शक्ति को जागृत करने के उद्देश्य से शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें ध्यान–साधना एवं आध्यात्मिक ज्ञान के साथ मानव की आन्तरिक क्षमता एवं योग्यता को जागृत करने वाले प्रेरक प्रस्तुत किये जायेंगे। जिसमें शिविरार्थी अपनी योग्यता और क्षमता को समझकर उसे समाज के उत्थान में लगा सकेंगें।

प्रथम शिविर 1 जुलाई, 2014 से 6 जुलाई, 2014 तक आयोजित किया जा रहा है। तत्पश्चात् भी निरन्तर शिविर लगेंगे जिनकी तिथियों की सूचना शिविरार्थियों को पत्र अथवा ईमेल द्वारा दे दी जायेगी।

शिविरार्थी महानुभाव को 1 जुलाई को अपरान्ह 3 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना होग़ा। इस शिविर में आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी। इसमें संख्या सीमित है अतः शिविर में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करें।

आपके आवेदन के अनुसार आपको शिविर सम्बन्धी और मार्ग सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी शीघ्र प्रदान कर दी जायेगी।

विशेष – शिविर की समयावधि तक सभी शिविरार्थियों को दिन–रात (महिला शिविरार्थिनियों के लिये समुचित आवास व्यवस्था अलग होगी) सम्पूर्ण समय शिविर स्थल पर ही रहना होगा।

आयोजक
स्वामी अग्निवेश
ईमेलः agnivesh70@gmail.com

प्रशिक्षक
डा० ओम्‌दत्त आचार्य
info@vishvamaryam.com
मो. 09654064998

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक का नवीन अंक मिला। पत्रिका का बहुआयामी स्वरूप देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। दलित शोषित तथा पिछड़े वर्गों की समस्याओं को उजागर करने तथा अन्धविश्वास, पाखण्ड को प्रकट करते लेख प्रकाशित करके आप वास्तव में समाज को एक नई राह दिखा रहे हैं।

महिला जागृति से सम्बन्धित कई लेख बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित किये गये हैं। स्वस्थ परिवार समाज और देश के निर्माण के लिए स्त्रियों की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण है। लेकिन महिलायें आज भी उपेक्षा की शिकार हैं जो अच्छे समाज के निर्माण में बाधक है। आपके इस सतत प्रयास के लिए बधाई।

– रमेश कुमार श्रीवास्तव, शिमला (हि. प्र.)

वैदिक सार्वदेशिक का 17 से 23 अप्रैल 2014 का अंक। "धर्म के नाम पर पाखंड से बचें" डॉ. पूर्ण सिंह डबास, प्रधान आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली का लिखा लेख। पाखण्डियों के लिए कुठाराघात तथा उनके चंगुल में फंसे सामान्य जनता की आंखों पर जो धर्म के नाम का पर्दा पड़ा हुआ है उसका पर्दाफाश करने में सफलता पाई है।

धर्म के क्षेत्र में जिन शब्दों के भ्रम जाल में लोगों को फंसाकर उनका प्रयोग एवं प्रचलन कर लोगों को भरमाया गया है। उन शब्दों की सटीक व्याख्या देकर लोगों के भ्रम निवारण का सार्थक प्रयत्न लेखक ने किया है।

बहुत ही सरल शब्दों में सरल भाषा में तथा अनेक उदाहरणों के साथ लिखा लेख बहुत ही उत्तम और प्रासंगिक बन गया है।

शर्त इतनी ही है कि लोग इस लेख को पढ़ें, समझें, चिंतन मनन करें, धर्म के भ्रम से छुटकारा पाने का प्रयत्न करें।

– अजित कुमार सरसंवे, उदगीर-413517, जिला- लातूर (महा.)

ईश्वरीय ज्ञान चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. मनुष्य मात्र के लिये उपलब्ध

10 या इससे अधिक सैट मंगाने पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट का लाभ उठायें

परमात्मा ने अपने ज्ञान को सभी मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रुति रूप में दिया, जो कि लम्बे कालान्तर के पश्चात् पुनः ऑडियो डी०वी०डी० (श्रुति) रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

चारों वेदों के बीस हजार चार सौ अठ्‌ठाईस (20,428) मंत्रों को हिन्दी में अर्थ और उनके भावार्थ सहित 362 घण्टे की 8 डी०वी०डी० में डाला गया है।

मंत्रों के साथ उनके देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर भी दिये गये हैं। सभी मंत्रों का शुद्ध एवं सस्वर पाठ किया गया है तथा साथ ही संगीत भी दिया है। 8 डी०वी०डी० के एक सेट की सहयोग राशि 1000 रू. है। 8 डी०वी०डी० के दस या दस से अधिक सेट मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट के साथ 500 रू. प्रति सेट में दिया जा रहा है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होता है।

हमारा लक्ष्य व्यापार करना न होकर वेदों को भारतीय प्रान्तीय भाषाओं एवं विश्व के देशों की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित करके फिर श्रुतिरूप में करोड़ों लोगों तक पहुंचाना है।

अतः इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग कीजिये और आज ही अपने लिये और दूसरों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने के लिये अधिक से अधिक सैट मंगाने का निम्न सम्पर्क सूत्रों पर आदेश कीजिये।

साहित्य विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
फोनः 011–23274771, 23260985

सर्व धर्म संसद
7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–1
फोनः 011–23367943, 23363221

ईमेलः sarvadeshikarya@gmail.com

विश्वम्आर्यम स्प्रिचुअल डी.वी.डी., प्रा. लि. 302, पंचशील गली नं. 1 गढ़ रोड़ मेरठ (उ. प्र.)
www.vishvamaryam.com info@vishvamaryam.com
Mob. +91-8755280038

घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने का सुनहरा अवसर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा एक बार फिर नये कलेवर में प्रकाशित

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ

सत्यार्थप्रकाश

मूल्य : 80 रुपये

आकर्षक एवं सुन्दर बहुरंगी आवरण तथा बढ़िया कागज 23X36 के 16वें साईज में 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।